श्री राम

प्रेम दर्शन

कृपा करो हे दीनदयाला, तेरी ओट आ पड़ा

राम जी राम राम

श्रीराम

राम जी की कृपा
सदैव आप पर बनी रहे
ऐसे २ शुभ कार्य आप से
करवाते रहें।
सदा २ तुम्हारे ही है
राम जी ~~रामराम~~
श्रीराम

24.5.2000

श्रीराम

क्र. सं.	विषय	पृ. सं.
1.	श्रीराम जपो जी	1
2.	कृपा क्यों मांगे	6
3.	दोहा	7
4.	जब पहुंचे कृपाधाम	8
5.	अखण्ड यज्ञ	11
6.	भजन (नया सम्मत)	12
7.	भजन (प्रार्थना) आओ मेरे रामजी	15
8.	माया में अब न फंसाना प्रभुजी	18
9.	राम रामैति रामैति	21
10.	मेरे राम जी हैं, मेरे राम जी हैं	22
11.	मैंने अपने प्रभु को जान लिया	26
12.	करूणा कर कुछ ऐसी किरपा	30
13.	हरि चरणों में चित तूं लगा के	33
14.	मेरी रोज दिवाली जी कि	38
15.	हरि ऐसी बुद्वि बना दो राम	42

16.	शिवरात्रि का लड्डू	44
17.	शाहों के शहनशाह मेरे राम जी	48
18.	भजन-तेरे नाम रंग ऐसा चढ़या, इओ	51
19.	तेरी किरपा नाल मस्ती है छाई	54
20.	भजन-आत्मज्ञान है सबसे ऊँचा	57
21.	दुर्गा अष्टमी (नवरात्रे)	
	आया अष्टमी का त्यौहार	60
22.	भजन-ऐ लों मेरी नैया संभालो राम जी	66
23.	भुल्लां तेरी ओ, नसीब नहीं ओ बणदे	69
24.	ओन्हां जन्म जन्म सुख पाइआ	73
25.	शाहों के शहनशाह तेरे दर आया सवाली	75
26.	किसे नाल राम नहीं	80
27.	बोल हरि बोल हरि	83
28.	राम जी के नाम ने तो पाथर भी तारे	86
29.	रब्ब मेरा सतगुरु बन के आया	88
30.	सांवरे घनश्याम तुम तो प्रेम के अवतार हो	91

31.	मेरा दिल है दीवाना शाम तेरे लिए	92
32.	10 निर्देश	94
33.	श्री कृष्ण गोबिन्द हरे मुरारे	96
34.	भगवग कृपा की अदभुत महिमा	98
35.	बांके बिहारी रे दूर करो दुख मेरा	101
36.	मेरे घर आना सांवरिया	102
37.	श्रीराम श्रीराम कहते चलो	104
38.	मन्दिर में रहते हो भगवान	106
39.	किए जा राम का सिमरन	108
40.	प्रभु अपने चरणों के काबिल बना दो	110
41.	जन्म देने वाले तू इतना तो बोल रे	112
42.	जागो सोने वालो जगाने वाला आ गया	115
43.	करवा चौथ का त्यौहार	117
44.	ऐसी किरपा मो पै करो	121
45.	श्रीराम जी जिनका नाम है	123
46.	कभी भोले बाबा बन जाते हैं	124
47.	मन मूर्ख अड़ियां करदा	125
48.	हरि जी से मिलने की इक धुन	128

49.	हरि चरण नूं छू के कराम आसीं	131
50.	रामनाम की महिमा	133
51.	राम कहो राम कहो	134
52.	चेतावनी (प्रकृति भी शान्त रहे)	136
53.	मांगा है मैंने श्याम से वरदान एक ही	141
54.	याद कर ले, हरि को याद कर ले	143
55.	राम जी, मेरे राम जी, आया हूं मैं	144
56.	श्रीराम जी का सिमरन किया करो	146
57.	रे मन जाग जाग जाग	148
58.	कृपाधाम की महिमा	150
59.	मन चलो चलें कृपाधाम	152
60.	राखो राखो जी कृपानिधान	154
61.	कृपाधाम दीयां महिमा बथेरियां	156
62.	कोई बोले राम कोई अल्लाह बोले	158
63.	करवा दे रब्बा संता दे नाल (पंजाबी भजन)	160
64.	छोटा जिहा कम अज तेरे जिम्मे (-राम-)	162

भाग दूसरा

(सच्चा सौदा बाबा जी दा)

क्र.सं.		विषय	पृ.सं.
1.		हरि चरण शरण गोबिंद दुख भंजना	1
2.		हरि धारहु, हरि धारहु किरपा	5
3.		हमरा ठाकुर सब से ऊंचा	9
4.		मोरे आये हैं, आये हैं	13
5.		दरसन देखत दोख नसै	17
6.		राम राम राम, जप रमत राम सहाई	21
7.		अमृत पीओ, सदा चिर जीओ	24
8.		जप मनक मेरे गोबिंद की बाणी	28
9.		सुणि सुणि नाम तुम्हारा प्रीतम	31
9.	(क)	भी गुर देखण जांई प्यारिया	34
10.		बाबा विख देखिया संसार	38
11.		बिसर गई सब तात पराई	42

12.		हंऊ वारि वारि अपने गुरू कां जांसा	45
12	(क)	अऊखी घड़ी न देखण देइं	48
13.		सभै गलां विसारन इको विसार न	49
14.		अऊखी घड़ी न देखण दई	53
15.		अब हम चला ठाकुर पै हार	56
16.		लजा राखी राम, मेरी लजा राखी	58
17.		नारायण नारायण नारायण	59
18.		प्रभु मेरा अन्तरयाम जान	61
19.		काहे मन तूं डोलता	64
20.		संत रहत सुनहु मेरे भाई	67
21.		सतगुरू साचे दियां भेज	73
22.		हऊ देखा दर्शन तेरा	75
23.		हल्ले यारा हल्लेयारा खुशखबरी	77
24.		हरि जीओ किरपा करे	79
25.		मेरे प्रभु प्रीतम प्राण आधारा	80
26.		अविचल नींव धराई सतगुरू	81
27.		दरशन देमांगऊ, मांगऊ दरशन	83
28.		ध्यान समाधि	85
29.		जय गुरूदेव	102

30.	आरती श्रीसतगुरूदेव जी की	115
31.	आरती सत्यनारायण जी की	117
32.	आरती भोले बाबा जी की	120
33.	आरती वैष्णोदेवी मां की	122
34.	आरती बांके बिहारी जी की	124
35.	आरती निराकार की	127
36.	आरती झूले लाल जी की	130
37.	आरती जगदीश जी की	133
38.	रास कृपाधाम में	136
39.	दूसरी रास (पहाड़ी भाषा)	138
40.	तीसरी रास	140
41.	हवन मन्त्र	141

रामजी रामराम

चरणों में समर्पित कर उनका बन जाता है। वह सम्पूर्ण विकारों को त्यागने में समर्थ हो जाता है व उनका कृपा पात्र बन जाता है और इस भवसागर को अनायास पार कर पूर्णब्रह्म से मिलने में समर्थ हो जाता है। अतः इसे पढ़े मनन करें व अपने मानव जीवन को सार्थक करें।

हर समय नाम जपने का अभ्यास करें। व्यर्थ के वादीववाद से बचें और चिन्तन करें उस प्यारे जू का जो आपके रोमरोम में समाया हुआ है।

नोट---- जो भी इस पुस्तक को ले, कृपया शीघ्र में पाँच शब्द अवश्य पढ़ने का अभ्यास डालें।

"श्री राम"

भूमिका

परम पूज्य पूर्ण सतगुरु, सर्ववन्दनीय सर्वप्रिय 'श्री रामजी' द्वारा रचित यह "प्रेम दर्शन" नामक पुस्तक जो शब्दों व भजनों के रंग बिरंगे सुरभित पुष्पों से सुसज्जित है। आपके कर कमलों में सुशोभित है।

इसे उन्हीं की लिपि व शैली में प्रस्तुत किया गया है व इसकी प्रतिलिपियों को Photo state का रूप देकर आपके समक्ष "श्री रामजी" के प्रत्यक्ष साक्षात्कार का अनुभव कराया गया है।

यह उनकी पन्द्रहवीं पुस्तक है जिसमें "श्री रामजी" के भावों का दिग्दर्शन उनके रचित भजनों के रूप में हुआ है। उनका आशय है कि "श्री रामजी" नामक तत्त्व अपने आप में पूर्ण ब्रह्म स्वरूप है। उनके दिये मंत्र को जो हृदय में धारण कर निरंतर जपने 2000 का अभ्यास करता है, अपने 'स्वयं' को उनके पावन

P.T.O.

"श्रीराम" जपो जी

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला" (गुरुमन्त्र)

विशेष कृपा मांगते हैं, कि हर समय मुझे अपने प्रभु (रामजी) की याद रहे हर शै में, हर जीव में, कण कण में मुझे आप ही नज़र आयें

"यो माम् पश्यति सर्वत्र" (गीता)

सिया राम मय सब जग जानी (रामायण)

"अव्वल अल्लाह नूर उपाइआ" (गुरुबाणी कुरान)

जिधर देखता हूं, उधर तू ही तू है "बाईबल"

"रामजी राम राम" मैं अपने राम (जो स्मरण कर

JAN 2000			
S	◊	9	23
M	◊	10	24
T	◊	11	25
W	◊	12	26
T	◊	13	27
F	◊	14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	31
T	4	18	◊
W	5	19	◊
T	6	20	◊
F	7	21	◊
S	8	22	◊

रहा है) उसे राम राम कह कर इजहार
कर रहा हूं

सब में एक शक्ति रमण कर रही है
जिसे हम राम कहते हैं

राम जी राम राम

प्रात: सूर्य से पहले उठें।

पांच बार कृपा का मन्त्र उच्चारण
करें "कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला"

पहली कृपा मेरे मन पर रखना
इस पर कुसंग को प्रभाव न हो, मन शान्त रहे

दूसरी कृपा मेरी बुद्धि पर रखना
बुद्धि मन को विचलित न कर दे
सद्बुद्धि देना। आप की कृपा से ही हो
सकती है।

तीसरी कृपा — परिवार के लिए मांग रहे हैं, सारे सदस्य शान्त रहें, सब अपने आप को मुसाफिर समझें, वैराग्य और ज्ञान जाग्रत रहे

चौथी कृपा — शरीर के लिए, स्वस्थ रहे
"शरीर खलु धर्म साधनम्"
यह चलता फिरता मन्दिर है, इस में मेरे प्रभु विराजमान है इस भाव से इसे ठीक रखें, प्रभु की कृपा से ही यह भाव स्थिर रह सकता है

पाँचवी कृपा — हम सब बाहर नौकरी आदि करने जाते हैं, बच्चे भी पढ़ने जाते हैं सब पर कृपा रखना, सब सकुशल घर आयें

घर से निकलते समय भी इस मन्त्र का उच्चारण अवश्य करें। रामजी कृपा रखेंगे

रामजी राम राम
हरिराम

FEB 2000

S	◇	13	27
M	◇	14	28
T	1	15	29
W	2	16	◇
T	3	17	◇
F	4	18	◇
S	5	19	◇
S	6	20	◇
M	7	21	◇
T	8	22	◇
W	9	23	◇
T	10	24	◇
F	11	25	◇
S	12	26	◇

फिर स्नान करने के बाद प्रार्थना अवश्य करें, जिसमें हम केवल भक्ति मांगें व नाम मांगें, यह प्रार्थना "कृपा धाम" को आप ले सकते हैं अगर आप चार बार करने का संकल्प लें। इसमें

रामायण, गुरुवाणी गीता के द्वारा पूरी प्रभु (रामजी) से भक्ति शक्ति की मांग की गई है समर्पण किया गया है इससे सब को बहुत लाभ हुए हैं रोग मिट गये हैं, आनन्द में जी रहे हैं जिन्होंने यह प्रार्थना की है।

महाराज फरमाते हैं, केवल नाम मांगो

"बिन बुध होर जे मंगणा
सिर दुखां दे दुख" (गुरुवाणी)

"अनन्यास चिन्तयन्तो माम
नित्य युक्ता उपासते" (गीता)

कलियुग केवल नाम अधारा
(रामायण)

प्रातः रात को पाँच माला कर कृपा के मन्त्र
की अवश्य करो 10 माला "श्रीराम" नाम की
इससे हमारे पास कृपा स्टाक हो जायेगी
फिर जब भी हम पाँच बार यह मन्त्र किसी
के दुख निवारण हेतु बोलेंगे, उस का दुख
अवश्य ही दूर हो जायेगा, परोपकार भी
आवश्यक है।

रामजीराम राम

श्रीराम
17.1.2000

6

कृपा क्यों मांगें ?

"मूकम् करोति वाचालम्
पंगु लंघयते गिरिम्" (गीता)

राम कृपा नासहिं सब रोगा (रामायण)

तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे (गुरबाणी)

जब दया दृष्टि हो जाती है
सूखी खेती हरियाती है (बाईबल)

ईशा अल्लाह रवा (कुरान)

विवेक कृपा हो जाने पर जीवन कमल के समान हो जाता है। महाराज जी की वाणी मे, कहा
"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला"

रामजीराम राम
श्रीराम

दोहा

परम कृपा स्वरूप है
परम प्रभु श्रीराम
परम पावन है आत्मा
परम पुरुष सुखधाम

जो बात दवा से हो न सके
वह बात दुआ से होती है
जब कामिल मुर्शिद मिलता है
तो बात खुदा से होती है

राम भरोसो राम बल, राम नाम विश्वास

सुमिर नाम मंगल कुशल, मागत तुलसीदास

चलते चलते युग गया
मिला न निज धाम
पूरी प्रभु मुझे आ मिले

जब पहुंचे किरपा धाम

कृपा धाम मे तो केवल कृपा ही बटती है, जिससे भक्ति शक्ति ऐश्वर्य सब स्वयं ही प्राप्त हो जाता है इस लिए (भजन)

कृपा मांगो भक्ति मांगो, यही तुम्हारा काम है
आगे तेरी लाज रखना, रामजी का काम है 2

II

राम जी की कृपा से, रोग ठीक हो जाते है
जो भी प्रभु का नाम ध्याते, आनन्द 2 पाते है
रामायण मय्या का सच्चा यह ऐलान है
आगे तेरी लाज रखना रामजी का काम है
कृपा मांगो

III

सब मे तुम प्रभु को देखो, द्वैत भाव मिट जायेगा
रामजी राम राम, रामजी राम राम, सब को तुम बुलाओ जी

श्री कृष्ण की गीता का यही तो कहना है
आगे तेरी लाज रखना, राम जी का काम है
कृपा मांगो भक्ति मांगो --

IV

दर्शन होते सब में प्रभु के
जो हरदम नाम जपते हैं।
गुरु मन्त्र के जाप से,
सारे पाप कटते हैं।
निर्मल होना पवित्र रहना, गुरुवाणी का पैगाम है
आगे तेरी लाज रखना, रामजी का काम है
कृपा मांगो -

V

ईश्वर अल्लाह नूर उपाइआ, कुरान ↑
किसी की निंदा नहीं करना, यही भाव बतलाता है सिखाता है
[illegible] में छल ने नहीं जाना, कुरान का ऐलान है
आगे तेरी लाज रखना राम जी का काम है

कृपा मांगते मांगते नयी सदी का
नया संवत (साल) आ गया, पिछले कई सालों
से यहां "कर कृपा प्रभु दीनदयाल।।
तेरी ओर पुरी गोपाल।। का
आखंड यज्ञ चल रहा है, इस लिए पूरी विश्वास है
यह आने वाली सदी भी शान्ति पूर्वक होगी
सारे संसार के लिए।

अभी थोड़ी सी गड़बड़ हो गई थी
जब High Jackers ने यात्रियों को तंग
किया, परन्तु , इधर इस पाठ के साथ
प्रार्थना की गई कि आप हे प्रभु अपनी
कृपा पूरी धारण करो, और संसार में
शान्ति करो। आखंड यज्ञ प्रारम्भ हो गया,
जो कृपा धाम में अभी हो रहा है और
घर घर में भी सारे सतसंगी मिल
कर, कर रहे हैं।

11

आवड़ मैं

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूरी गोपाला।
जगत जलंधर राख ले
प्रभु अपनी किरपा धार

अब कोई चिन्ता नहीं अब तो।
सारे संसार में शान्ति रहेगी और सब
भारतवर्ष तो America से भी आगे बढ़ेगा।

आओ तो सारे मिल कर नयी
सदी खुशियों से मनाए। बस हमें
अपने God -
Generator
Operator
Destroyer
से सहमत रहना है।

21 JANUARY FRIDAY

मसीह (नया सम्मत) 2000 ←

आया आया नया सम्मत, हो जाओ प्रभु से सहमत
मिल के बजाओ सब तालियां,
हां जी तालियां

II

यह सम्मत है इक्कीसवीं सदी का
अब भजन करो तुम ईश का
हो जायेगा भव से पार
होगा हम सब का उद्धार
मिल के बजाओ - - -

III

भूत काल की चिन्ता छोड़ दो
अपना मुख प्रभु की ओर मोड़ लो
डूबने वाला यह संसार
दिन दिन होती उमर करार
मिल के बजाओ सब तालियां

IV

समय बीता सो अच्छा ही बीता।
आगे आयेगा, वह अच्छा ही आयेगा।
करो प्रभु पर विश्वास
फिर चिन्ता न आवे पास
मिल के बजाओ - - -

V

अपनी इन्द्रियों, को वश में करना
मन बुद्धि चित सदा। प्रभु में रखना
इन में रामजी को बसाओ
ज्यादा बातें न बनाओ।
मिल के बजाओ

VI

तामस भोजन नहीं कभी खाना,
अपने प्रभु को है भोग लगाना।
अन्तर मे रामजी बैठे आप,
फिर रोग न आवे पास।

VII मिल के बजाओ —

बालपना, यौवन, बुढ़ापा सुधारो
तीनों पन में प्रभु को पुकारो
केवल रामजी का हो साथ
उन में पूरा हो विश्वास
मिल के बजाओ —

VIII

दान स्नान भजन करते रहना
तन मन धन परोपकार में लगाना
हो जायेगा प्रभु से प्यार
जीवन नय्या होगी पार
मिल के बजाओ — —

IX

हसते हसते हम जग से जायेंगे
गा के प्रभु की जय कार बुलायेंगे
अब तो आ गये तेरे द्वार
अब न भेजना बारम्बार । मिल के —

श्रीराम जयो जी

नये वर्ष में अपने इष्टदेव रामजी से
सही प्रार्थना करनी है

भजन (प्रार्थना)

आओ मेरे रामजी, मुझे रंग चढ़ा दो,
प्यारे प्यारे अन्तर में, दर्शन दिखा दो।

II

भक्ति का सुरमा मैं, आँखों में लगाऊँगी
झूठी दुनियां छोड़ के, मैं तेरी हो जाऊँगी
अन्तर तिमिर, मेरा आप मिटा दो
प्यारे प्यारे अन्तर में —

III

गुरु मन्त्र जाप कर, तोहे अपना बनाऊँगी
अन्तर सुख, बाहर सुख, सारे सुख पाऊँगी
सब के जीवन को, सुखी बना दो
प्यारे प्यारे रामजी —

आत्मा मैं तेरी, प्रभु आप हो परमात्मा।
किरपा कर के कर दो मेरे पापों का खात्मा
आत्म स्वरूप मे लीनता करवा दो
प्यारे प्यारे राम जी के - - -

IV

विनती मेरी सुन लो स्वामी
सगल घटा के अन्तरयामी
आनन्द ही आनन्द जीवन मे बरसा दो।
प्यारे प्यारे राम जी - -

V

मै हूं तेरी गोपी, प्रभु तू है मेरा कान्हा
रोज़२ भरूगी मैं तेरा हरजाना।
सेवा सिमरण साधना, के गहने पहना दो।
प्यारे प्यारे राम जी -

जीवन सजा के, मैं तेरे द्वार आऊं
लोक परलोक दोनों, सुखी बनाऊं ?
आवागमन की कैद से छुड़ा दो
प्यारे प्यारे राम जी - -

रामजीरामराम

श्रीराम
18.1.2000

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर मुड़ा गोपाला"

S	◊	13	27
M	◊	14	28
T	1	15	29
W	2	16	◊
T	3	17	◊
F	4	18	◊
S	5	19	◊
S	6	20	◊
M	7	21	◊
T	8	22	◊
W	9	23	◊
T	10	24	◊
F	11	25	◊
S	12	26	◊

श्रीराम

(प्रार्थना)

हमें नित्य प्रति राम जी से यही प्रार्थना करनी है कि माया में रह कर भी, हमें इस से अलिप्त रखें, हमारा जीवन अपनी कृपा से कमल जैसा बनायें, तभी जीवन में आनन्द है।

आओ तो सारे मिल कर गावें और प्रभु से प्रार्थना करें

(प्रार्थना)

माया में अब न फसाना प्रभु जी
चित चरणों में लगाना प्रभु जी

II

अपरम्पार है तेरी माया
कहीं पर धूप कहीं पर छाया
मन को सुदृढ़ बनाना प्रभु जी

S M T W T F S S M T W T F S
9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29 30 31
JAN 2000

चित चरणों मे - -

III

मन मे सदा मैं तुम को निहारु,
ओझल हो जाये तो नाम पुकारु।
सदा ही दर्शन दिखाना प्रभु जी
चित चरणों मे - -

IV

हर वर्ष नया वर्ष है आता,
हर रोज कोई न कोई है जाता।
बीता समय फिर हाथ न आता,
सीधे मार्ग पै लगाना प्रभु जी।
चित चरणों मे

V

दिन चढ़े शीघ्र ही रात हो जाये
ऐसे ही आयु बीतती जाये
नाम भी अपना जपाना प्रभु जी
चित चरणों मे - -

VI

मात पिता सुत बन्धुप भाई
अन्तकाल न होय सहाई
स्वार्थ की दुनिया से बचाना प्रभुजी

VII चित चरणों - - -

निष्काम कर्म हों सब प्रभु मेरे
राम जी बसे मेरे नेड़े नेड़े
झूठी मोह ममता से बचाना प्रभुजी
चित चरणों में

VIII

अब तो दासी शरण तेरी आई
मेरे रामजी हैं, सदा सहाई
श्रीराम श्रीराम जपाना प्रभुजी
चित चरणों में —

रामजीराम राम
श्रीराम
18·1·2000

S	M	T	W	T	F	S
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22

श्रीराम

राम रामेति रामेति
रमे रामे मनोरमे।
सहस्र तात्ल्यम रामनाम वैरानने

राम का नाम सब से बड़ा है
इस लिए हम गुरु के नाम की जगह
राम का नाम ही उच्चारण करते हैं
वैसे भी गुरु मे और राम मे कोई
अन्तर नही।

रामजी को सम्बोधन करते हुए
उन से सेवा मांगे और प्रार्थना करें
कि वह हम संसार में रहते हुए भी
मुक्त अवस्था में रखें, ताकि माया का
प्रभाव हम पर न पड़े। यह केवल
उन की कृपा ही कर सकती है।

प्रार्थना

मेरे राम जी हैं, मेरे राम जी हैं,
सब जन से बड़े हैं देवा
सारी उमर करूं तेरी सेवा
कि जय जय जय श्रीराम
" " " " "

II

हमें अपना नाम जपाना
मोह माया से हमें बचाना
कि जय जय जय श्रीराम 2
मेरे राम जी हैं ——

III

हरि सुन्दर छवि दिखाते
मेरे मन को आप हरि भाते
कि जय जय जय श्रीराम 2
मेरे राम जी हैं

S	◇	13	27
M	◇	14	28
T	1	15	29
W	2	16	◇
T	3	17	◇
F	4	18	◇
S	5	19	◇
S	6	20	◇
M	7	21	◇
T	8	22	◇
W	9	23	◇
T	10	24	◇
F	11	25	◇
S	12	26	◇

IV

मैं अज्ञानी जीव तुम्हारा
लोभ मोह से मैं दुखियारा।
कि जय जय जय श्रीराम 2
मेरे रामजी ---

V

प्रभु आप हो बड़े दयालु,
मुझे न बनाना झगड़ालु।
कि जय जय जय श्रीराम 2
मेरे रामजी ---

VI

मुझे सब में राम दिखा दो,
मेरी समता दृष्टि बना दो।

कि जय जय जय श्रीराम 2
मेरे रामजी ---

VII

तुम सदा हो करुणा के सागर
करुणा से भरो मेरी गागर
कि जय जय जय, श्रीराम

VIII

कई जन्मों से माया ने घेरा
हृदय में लगा लो, डेरा
कि जय जय जय श्रीराम 2

IX — मेरे राम जी है-

मोहे अपने दर पै बुलाना
और सुन्दर छवि दिखाना
कि जय जय जय, श्रीराम 2
मेरे राम जी है---

X

प्रभु लाखों पापी तारे
नहीं गुण और दोष विचारे
कि जय जय जय श्रीराम 2

XI — मेरे राम जी

प्रभु कृपा से भक्ति पावें
कमल जैसा जीवन बनावें

25

कि जय जय जय, श्रीराम
मेरे रामजी हैं ---

XII

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर घूरी गोपाला।
मै जपु गुरु मन्त्र तुम्हारा
कि जय जय जय, श्रीराम
मेरे रामजी हैं -

रामश्रीरामराम

श्रीराम
19.1.2000
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर घूरी गोपाला

S	◇	12	26
M	◇	13	27
T	◇	14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	◇
S	5	19	◇
M	6	20	◇
T	7	21	◇
W	8	22	◇
T	9	23	◇
F	10	24	◇
S	11	25	◇

"श्रीराम"

मेरे राम जी हैं, तो सदा ही
आदि सच, जुगादि सच
है भी सच, नानक होसी भी सच
परन्तु वह कैसे हैं इस भजन में
प्रगट किये गये हैं

"भजन"

मैंने अपने प्रभु को जान लिया
मेरे राम जी करुणा निधान हैं
झूठी माया काया इस जगत की
काहे झूठा करता गुमान है
मैंने अपने - - -

II

जो भी शरण इन की आ गया,
वह तो चारों पदारथ पा गया।
शान्तिमय बना दिया जीवन उसका

यही मेरे प्रभु का विधान है

मैंने अपने -

III

अब छोड़ कर मोह माया को
तू भी अपने प्रभु की शरण ले
जीवन मुक्त तू भी हो जायेगा
मेरे राम जी का फरमाना है

मैंने ---

IV

श्वास श्वास में तू श्रीराम जप
चित अब उन्हीं के चरणों में रख
तेरी बिगड़ी प्रभु आप संवारेंगे
सीता मय्या का यही फरमाना है

मैंने ---

V

पांचों चोरों ने प्रभु से अलग किया
भारी मोह माया ने ग्रसित किया

28

श्रीराम

अब तो अन्तर मे दर्शी दिखा दिया
मेरे रामजी, बड़े मेहरबान है
मैने अपने प्रभु —

VI

ताप पाप सब मिट गये
बैर भाव नही किसी से रहा
धन्य धन्य जन्म मेरा सफल हुआ
मिले आत्माराम महान है
मैने अपने —

VII

अब कलयुग का घर मे प्रभाव नही
सात्विक वृत्ति सदा मेरी बनी रहे
आनन्द आनन्द जीवन मे छा गया
मेरे रामजी, की कृपा महान है

रामजीरामराम श्रीराम
10 P.M 18.1.2000

श्रीराम

अन्तर में प्रगट होने पर भी हमने सतसंग सेवा सिमरण, साधन यह नहीं छोड़ने क्योंकि स्वयं श्री कृष्णाजी (श्रीरामजी) गीता में फरमा रहे हैं

यह त्रिगुण दैवी, घोर माया,
अगम और अपार है,
आता शरण मेरी, वही,
जातासहज में पार है।

सारा परिवार इस मार्ग पर चले आओ तो सब मिल कर फिर प्रार्थना करें क्योंकि संसार में सब कार्य करने आसान हैं बस नाम जपना और हुक्म मानना मुश्किल है।

"आखरा ओखा साचा नाम"

(बाबाजी)

30

(प्रार्थना) भजन

करुणाकर कुछ ऐसी किरपा
तेरे द्वार पे निशदिन आते रहें
तेरे नाम का अमृत पी पी कर
श्रीराम की धुन में समाते रहें

II करुणाकर

दुनियाभर के सुख सारे प्रभु
न्योछावर करूँ मोहक छवि पर
निज भावों के सुन्दर सुमन प्रभो
तेरे चरणों पे रोज चढ़ाते रहें।

III करुणाकर

छाये जन मन में विघ्न बाधा
संकल्प न डोले हमरो कभी
बल ऐसा दो सत्के मार्ग चलें
सत्य कर्म ही नित्य कमाते रहें

करुणाकर

कटु, तीखे बोल न बोलें कभी
नहीं किसी को, कभी अपमान करें
खिल जाये सदा, यह फूल सा दिल
इस भांति सभी को खिलाते रहें

करुणाकर

यह तभी सम्भव हो सकता है
जब रामजी की पूरी कृपा रहे
इसलिए

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर दूरी जो वाला

19.1.2000

श्रीराम

अपने मन को सदा समझाते रहना है कि ऐ मन, तू सदा गुरुमन्त्र का जाप जप, देख तू सब पुराने पाप से मुक्त हो जायेगा क्योंकि

"नर आप ही है मित्र अपना
शत्रु अपना आप ही

जो, जीत लेता आप को,
वह बन्धु अपना आप ही
जाना न अपने आप को
रिपु सो, करे रिपुता वही"

श्री कृष्णाजी

मन के बाद बुद्धि, बुद्धि के बाद चित्त है, सो आओ चित्त तक पहुंचे और प्रार्थना करें

FEB 2000
S 6 13 27
M 14 28
T 15 29
W 2 16
T 3 17
F 4 18
S 5 19
S 6 20
M 7 21
T 8 22
W 9 23
T 10 24
F 11 25
S 12 26

राम नाम अति मीठा

भजन
(प्रार्थना)

हरि चरणों में, चित तू लगा के देख ले
दुख भजन कष्ट हरेंगे, राम गुण गा के देख ले

ॐ नमः नारायणा: बोलो
ॐ नमो: नारायणा: देवा
ॐ नमो: नारायणा: देवा
ॐ नमो: नारायणा: देवा

हरि चरणों में, चित तू ----

कर किरपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूर्ण गोपाला 2
पूर्ण कृपा करते हैं प्रभु
किरपा मांग के देख ले
दुख भजन कष्ट हरेंगे ----

बोलो

(ॐ नमः नारायणा.' बोलो

" " " " "

" " " " "

(ॐ नमः नारायणा.) देखो

राम कृपा नाशहि सब रोगा
जो एही भाँति बने सयोगा 2
सारे रोग भी दूर करेगे।
तू अजमा के देख ले
पूरी कृपा करते हैं
विश्वास बढ़ा के देख ले

(ॐ नमः नारायणा 4 बोलो
(ॐ नमः नारायणा देखो

जा पर कृपा राम की होई
ता पर कृपा करे सब कोई 2
पूरी कृपा करेंगे प्रभु जी
विश्वास बढ़ा के देख लो
दुखभंजन कष्ट हरेंगे
हरि शरण आ के देख लो
ॐ नमः नारायण
बोलो
" " " " "
" " " " देखो
" " " "

जा पर कृपा दृष्टि अनुकूला
ताहि न व्याप त्रिविध भवशूला 2
पूरी कृपा करते हैं
शरण मे आ के देख लो
दुखभंजन कष्ट हरेंगे
हरि शरण आ के देख लो

ॐ नमः नारायणाः बोलो
ॐ नमः नारायणाः बोलो

" " " "

" " " "

राखा एक हमारा स्वामी
सकल घटों का अन्तरयामी 2
रक्षा करते हैं भक्तों की
शरण में आ के देख लो

दुखभंजन कष्ट हरेंगे
हरि गुण गा के देख लो

ॐ नमः नारायणाः बोलो
" " " बोलो
" " " बोलो

रामभिमम " श्रीराम
19-1-2000
3.20 P.M

FEB 2000
S M T W T F S S M T W T F S
0 0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26
27 28 29

हमारे मन में कभी भी संशय नहीं आना चाहिए कि कोई दिन भारी है हमारे लिए क्योंकि सारे दिन भगवान के द्वारा बनाये गये है। अगर प्रभु की पूरी कृपा है तो।

माह दिवस मुहूर्त भले
जिन को नदरी करे
(बाबाजी)

धन गुरु नानक
मन दा मालिक धन गुरु नानक

इस लिए आओ सारे मिल के
दिवाली मनायें और
सदा प्रसन्न रहे
जीवन में सदा मुस्कान हो ओठों पै
प्यारे 2 राम जी का नाम हो।

(सतां दी रोज़ दिवाली)

मेरी रोज दिवाली जी कि
मैनू मिल गया जग दा वाली

मैं नचां ते गावां जी कि
देख के सूरत इस दी प्यारी

मेरी रोज़ - -

II

हरबेले, मेरे अंग संग रहदा,
कदे न इकली छोडे
अपनी याद करांदा रहदा
कदे न ओह मुह मोडे
मै इस दी हो गई जी कि
खिल गई, दिल दी, एह फुलवारी
मेरी रोज़ दिवाली

III

ज्ञान दा दीपक, अन्दर जगाया
अज्ञान अन्धेर मिटाया
अन्दर जद मैं झाती मारी
मेरा प्यारा नजरी आया
एहदी मस्ती छाई जी कि
भुल गई सारी दुनिया दारी

मेरी रोज़ - -

IV

सारी तृष्णा मिट गई मेरी
किसे दी चाह न बाकी
तेरी मस्ती तेरी हस्ती
कोई न मेरा आकी
हुण तूँ ही तूँ दिसदा जी
मैं ते, मेरी मिट गई सारी

मेरी रोज़ - - -

राम नाम दे लड्डू 000 खावां (0 हो जाओ)
हरि नाम दी मिश्री □ □ □ (चारों ओर राम ही राम)
माधव नाम दा मेवा खावां
मिल गई मन नू तृपति
मैं नच्चां ते गावां जी रज्ज
मैनू मिल गया, जग दा वाली

मेरी रोज़ दिवाली

Note यह सब रामजी की कृपा से होता है इसलिए

रामसियाराम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला

19.1.2000
3.40 P.M

जब से जगतपिता, जगतपति,
मिल ही गया तो, जैसे वह है वैसे हमें
भी रहना है

"तिस बडे को जाने सोय
ए बड बडा डीठा होय" बाबा जी
धन गुरु नानक जी
सब दा साँझा धन गुरु
नानक जी

मन बुद्धि चित्त सदा स्थिर रहे

संसार की माया इन्हें छूने न पाये

तभी जीवन में परमानन्द अनुभव
कर सकते हैं। आओ तो अपने
राम जी से कहें।

S 0 12 26
M 0 13 27
T 0 14 28
W 1 15 29
T 2 16 30
F 3 17 31
S 4 18
S 5 19
M 6 20
T 7 21
W 8 22
T 9 23
F 10 24
S 11 25

श्रीराम

हे रामजी, प्यारे रामजी,

? क्या

हरि ऐसी बुद्धि बना दो राम
ऐसा मन बना दो श्याम

I

मैं दुख मे, दुख न मानू
और सुख मे, तुम्हे पहचानू
अब ऐसी बुद्धि ——
ऐसी कृपा कर दो राम

II

न डरूँ मैं झूठे जग से
बस डरूँ तेरे वचनों से
ऐसी निर्भयता दे
ऐसी किरपा कर दो

III

मोहे माया का लोभ न आये
सोना मिट्टी सम हो जाये
ऐसी कृपा कर दो राम
इसी जन्म में कर दो राम

IV क्योंकि ?

यह झूठी माया साथ न जाये
नाम तू ही सदा, मेरे मन को भाये
ऐसी कृपा कर ---

V

मान अपमान भी सम हो जाये
मेरा मन सदा शान्त हो जाये
ऐसी पूरी कृपा --

VI

हर्ष शोक न मन में आये
सारा जीवन सम हो जाये
पूरी कृपा —

रामजीरामराम श्रीराम
19.1.2000 4.45 P.M

श्रीराम -44-

"शिव रात्रि का लक्ष्य"

शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम् 2
(पूर्ण शरणागति)

भजन

जाने अनजाने में पाप हुए
प्रभु आप सब पाप क्षमा करना
तेरे दर पे डेरा लगा ही लिया
मोहे अपने ही, दर पर रखना

II

मोहे दिव्य चक्षु दे दो प्रभु
अन्तर से तुम को पहचान सकूं
तेरा दर्शन, इक बार पा जाऊं
किसी और को फिर मैं न चाहूं

जाने अनजाने

S M T W T F S S M T W T F S
5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31
1 2 3 4

तेरा प्यारा दर्शन पा कर के,
अब तो कुछ चाह, नही बाकी बची।
आप मेरे हो, मैं बस आप की हूँ,
यह पवित्र सम्बन्ध जन्मो तक रहे।

IV

प्रभु प्रेम मे सब कुछ भूल गई,
और चाह नही, किसी को याद करूं।
मेरे हो अब तुम परमपिता,
बस तेरी ही याद मे हर पल करूं।

V

मेरी आशा तृष्णा खत्म हुई,
बस मैं और तुम अब एक हुए।
ज्योति मे ज्योति, मिल गई जब,
अब तो हम जीवन मुक्त हुए

3 MARCH FRIDAY 2000

VI

यह पल तेरी कृपा के सदके
आनन्द ही आनन्द बरस रहा
शिवोऽहम् शिवोऽहम् का नाद बजा
अब केवल तूँ ही तूँ ही शेष बचा

जीवन मुक्ति वास्तविक मुक्ति है
मरने के बाद किसने मुक्ति देखी
है

रामजी राम राम
श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर मुड़ी गोपाला

19.1.2000
5 P.M

जब हम स्वयं आनन्दमय होते हैं
तो दूसरों को भी आनन्द दे सकते हैं
ब्रह्मज्ञानी में और भगवान मे कोई
अन्तर नही

<u>नानक</u> ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर
(नानाजी)

अब हम शाहों के शाहनशाह रामजी से

शान्ति भक्ति प्रेम ज्ञान वैराग्य और
सद्गुणों की मांग कर मांग कर
सकते हैं। और अपने विकार उन के
चरणों में समर्पित कर सकते हैं।

सद्गुरु के ध्यान आते ही
आनन्द आ जाता है। आओ तो
अब आनन्द लें।

APR 2000

S	◊	9	23
M	◊	10	24
T	◊	11	25
W	◊	12	26
T	◊	13	27
F	◊	14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	◊
T	4	18	◊
W	5	19	◊
T	6	20	◊
F	7	21	◊
S	8	22	◊

प्रसाद -48-

(भजन)

शाहों के शहनशाह, शाहों के शहनशाह
मेरे रामजी हरि 2
मेरे नारायण हरि 2

II

सब की झोलियां भरना जी
हम सब पर कृपा करना जी
प्रेम शान्ति देना जी
सत सन्तोष देना जी
शाहों के शहनशाह 2

III

मेरे रामजी - - - -
दया धर्म देना जी 2
ज्ञान वैराग्य देना जी 2
मेरे रामजी हरि 2
शाहों के शहनशाह
शाहों के शहनशाह

IV

नाम दान देना जी 2
भक्ति शक्ति देना जी 2
मेरे राम जी हरि 2
शाहों के शहनशाह 2

V

सच्ची प्रीति देना जी 2
अपना आनन्द देना जी 2
मेरे राम जी हरि 2
मेरे नारायण हरि 2

VI

नम्रता पवित्रता देना जी 2
मौन आरोग्यता देना जी 2
सतसंग सेवा देना जी 2
मेरे राम जी हरि 2 शाहों के शहनशाह 2

VII

मेरा लोभ क्रोध लेना जी 2
मोह दूर करना जी 2
मेरे राम जी हरि 2 शाहों के शहनशाह 2

VIII

मेरा अहंकार हरना जी
मेरा पाखंड हरना जी
ईर्ष्या द्वेष हरना जी
मद मत्सर हरना जी
मेरे राम जी हरि 2 शाहों के शहनशाह 2

IX

मेरा आलस्य तामस हरना जी
निन्दा चुगली हरना जी
मेरे राम जी हरि 2 शाहों के शहनशाह 2

Note जो हम सामग्री कौड़ी के पास हैं।
उन्हें हम आप के चरणों में रखते हैं।
जो आप के पास सद्गुण है उन की भावना करते हैं।

श्रीराम राम जी राम राम

नाम का रंग सब से अच्छा रंग है
यह केवल सद्गुरु ही चढ़ा सकते हैं
"गुरुदेव माता: गुरुदेव पिता।
गुरुदेव सहोदर।"
जिन को यह रंग चढ़ गया वह धू
गा उठे।

भजन (भेंट)

तेरे नाम दा रंग ऐसा चढ़या ई ओ
तेरे लाल ने तेरा पल्ला फड़या ई ओ

I

तेरे नाम दा—
ज्योति तेरी प्रभु, जल थल विच जागदी ए
रात ओह चंगी, जेड़ी तेरे लेखे लगदी ए
तेरे नाम दा—

II

सिर है ओह चंगा, तेरे दर ते झुक जाये
जीभ है ओह चंगी, तेरा नाम ही जो गाये
तेरे नाम दा — —

III

श्रीराम

हथ ने ओह चंगे, तेरे अग्गे जुड़दे ने
पैर ने ओह चंगे, तेरे लई जो तुरदे ने

IV

नैणा ओह चंगे, तेरा दर्शन पांदे ने
स्वास ओह चंगे, तेरे नाम लग जांदे ने
तेरे नाम दा --

V

बन्दा ओह चंगा जेड़ा बन्दगी करदा ए
मां दी भगती नाल, जो झोली भरदा ए
तेरे नाम दा -

VI

धरती ओह चंगी जिथे, मां दा बसेरा ए
बस्ती ओह चंगी, जिथे सतसंग तेरा ए

VIII

संगत ओह चंगी जेहड़ी नाम जपदी ए
सतगुरु ओह चंगे, जेड़े दर्श करांदे ने

रामजीरामराम

श्रीराम
19.1.2000 9.30 P.M

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
◊	◊	◊	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊

श्रीराम

भजन 25.3.99 M.P मे लिखा

प्रभु की कृपा मे बहुत ही शक्ति है। जब भी हमे लगे कि हमारा जीवन अस्त व्यस्त हो रहा है कुछ मिल गया, या हमारा मन हमारे कन्ट्रोल मे नही आ रहा तो हमे जल्दी से प्रभु के सन्मुख हो कर कृपा याचना करनी चाहिए हे प्रभो! मुझे मस्ती का जीवन दो, आप की कृपा से, यह संसार के होटे २ पदार्थ, मेरे मन को प्रलोभन मे न डाल सके

मेरी जीवन पानी मे रहे
परन्तु विकारो का पानी
इस के अन्दर न आने पाये

यह केवल आप की कृपा से ही हो सकता है। नाम भी हमारा तभी चलता है, विकार भी कट जाते है कृपा मांगते रहे।

भजन

तेरी किरपा नाल, मस्ती हैं छाई
कि थोड़ी किरपा होर कर दो

" " " " " "

I

कृपा मैं मंगदी केवल याद जी तेरी
कर जाये जमा वाली, कामी मेरी
तेरे विच मिले आत्मा मेरी
जी थोड़ी कृपा होर - -

II

नाम जपां मैं तेरा दिन और राती
तूँ ही मेरा भाई बन्धु, तूँ ही सच्चा साथी
तेरे चरणा विच सुख शान्ति पाई
जी थोड़ी कृपा - - -

III

काम क्रोध लोभ मोह, मिट जाये सारा
मैं हूं प्यारे गोविन्द की, गोविंद हैं प्यारा
सब के लिए प्रेम उमड़े हमारा
जी - - - -

S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

IV. -55-

आनन्द ही आनन्द बाहर भीतर
परमानन्द की मस्ती, रोम रोम मे समाये
मेरे रामजी के बोलो, जय जय कारे
जी थोड़ी कृपा होर - -

V

कट जाये सारी अहमंता, मैं और मेरी
तूँ ही तूँ गाये, सदा रसना मेरी
हर पल निहारां, छवि तेरी
जी थोड़ी किरपा - -

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर मुड़ीं गोपाला।

20.1.2000
12.40 A.M

श्रीराम

जब हम अपने प्यारे प्यारे राम जी से,
सतगुरु से, कृपा मांगते रहेंगे, कि हमें
मस्ती की अवस्था में सदा रखें, तब
हम आत्मज्ञान के अधिकारी बनेंगे और
ऐसे जान जायेंगे, कि संसार में केवल
आत्मज्ञान ही सब से ऊँचा है शेष ज्ञान तो
केवल शारीरिक सुख के साधन है।

यह भी तो तब केवल मेरे प्रभु की
कृपा से ही सम्भव हो सकता है।

इस प्रकार से अपने आप को
समझाते रहना है कि, कैसे हम इस संसार
के बन्धनों से मुक्त हो कर परम धाम को
प्राप्त कर सकते हैं

यद्गत्वा न निवर्तन्ते
तद्धाम परमम् मम — श्री कृष्णा जी

भजन

(सलापट्टे M.P. देवना)

आत्म ज्ञान है सब से ऊंचा
आत्मा को पहचान लो
जग में रहो तुम कमल सरीखे
जग को सपना जान लो

श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम
श्रीराम, श्रीराम जपो 2

II

आत्मा में परमात्मा है, लीन है इस तरह
जैसे जल की बूंद रहती, सागर में हर तरह
माया का पर्दा हटा दो, एक ही को बस जान लो

श्रीराम श्रीराम श्रीराम
" " " " "

III

केवल किरपा राम जी की जाप लो जी
आत्म स्वरूप बनायेगी
मैं मेरी का बन्धन काट के

परम धाम पहुँचायेगी
आत्मस्वरूप तुम हो प्यारे
देह को मिथ्या मान लो
श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम
" " " " " "
श्रीराम श्रीराम जायोलो

IV

रामजी मेरे समरथ स्वामी,
सारे जग के वाली हैं।
इन की केवल, किरपा मांगो,
यह तो जग के माली हैं।
भला ही करते हैं मेरे स्वामी
ऐसा विश्वास धार लो।
श्रीराम श्रीराम 2
श्रीराम श्रीराम जायोलो

V

रामजी मेरे भगवान हैं

इन का करना ध्यान है
जो भी इन की शरण मे आता
करते सदा कल्याण है
"कर कृपा" का मन्त्र उच्चारो
जीवन अपना सवार लो।
श्रीराम श्रीराम श्रीराम
" " " " जाप लो।

रामश्रीराम राम
श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूर्ण जोवाला।

25.1.2000
3.10 P.M

S M T W T F S S M T W T F S
9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29 30
1 2 3 4 5 6 7 8

श्रीराम

दुर्गा अष्टमी (नवरात्रे)

नवरात्र साधना के दिन होते है, क्योंकि इस में व्रत रखे जाते हैं, खेतरी में जल चढाना, रोज ज्योति जगाना, सारा दिन भजन कीरतन करना, केवल फल-आहार करना,।

जब रामजी अयोध्यावासियो से बिछुड़ गये, तो सब ने फल आहार किया, जब तक राम जी हमें नही मिलेंगे, कुछ अन्न वगैरह नहीं खायेंगे, इस लिए अगर हम साधना प्रभु-प्राप्ति के लिए करते हैं तो हमे रामजी मिलेंगे। अर्थात हम रामजी जैसे बन जायेंगे।

इसलिए ज्यादा ध्यान हमने तपस्या में करना है। संयम रखना है, मन का, वाणी का, सारी इन्द्रियों का, इस के लिए तप चाहिए

भजन (अष्टमी का)

आया अष्टमी का त्योहार
मेरे सतगुरु मेरे नाल
मेरे सतगुरु मेरे नाल
मेरी मय्या मेरे नाल
मिल के बजाओ सब तालियां
हो तालियां

II

अष्टसिद्धि नवनिधियां मिलेगी
तेरी झोली आनन्द से भरेगी
अन्तर हो जाये प्रकाश
हो अज्ञान अन्धेर विनाश
मिल के बजाओ - - -

III

आठों पहर नाम है जपना
नाम जपना कभी भी न थकना
सदा सदा रहो होशियार

कोई कष्ट न आवे पास

मिल के बजाओ ---

हां तालियां

IV

आठों इन्द्रियों को वस में है करना।
सब इन्द्रियों में राम नाम भरना।
ज्यादा बातें न बनाओ
इन में राम जी को बसाओ।
मिल के बजाओ सब तालियां।

V

हां तालियां।

आठ नाम के लड्डु रोज खाना।
हरि ॐ राम श्याम, माधव गोविन्द कृष्णा।
किरपा धाम है तेरो नाम

मिल के बजाओ

हां तालियां

VI

आठों याम अपने रामजी को सम्भालो
बालपन यौवन बुढ़ापा सुधारो
प्रभु जी सदा है तेरे साथ
तेरा पूरा हो विश्वास मिल के बजाओ ---
हो तालियाँ

VII

सारे रिश्ते अपने प्रभु से बनाना
माता पिता बन्धु हरि को ही जानना
बाकी स्वार्थ का संसार
कोई करे न सच्चा प्यार मिल के ---

VIII

किसी समय में जग से है जाना
होगी सुबह, दोपहर, या हो शाम याँ
सारे कालों में, नाम जपना
नहीं मृत्यु, से भी डरना मिल के ---

हम हँसते हँसते जग से जायेगे
जा कर प्रभु को हाल सुनायेगे
अब न भेजना बारम्बार
अब तो आये तेरे द्वार
मिल के ---

X

यही विनती हमारी स्वीकार हो
प्रभु आप तो परम उदार हो
तेरी सगत है अनजान
करना सदा इस का ध्यान
मिल कर बजाओ
हो तालियां

रामजीराम राम
श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर दृष्टी गोपाला

10:30 P.M
25.1.2000

समपर्ण में बहुत शक्ति है, हर समय
हर पल, सब कुछ मेरे राम जी का है ऐसा
ध्यान करते रहना शक्ति है समपर्ण है
अपने प्रभु से क्षमा मागना और मान लेना
कि हम पापी हैं। यह भी शक्ति है, दर्शन के
लिए प्राथना करना, रोना, विरह होना
यह सारे शक्ति के ही लक्षण हैं। अपने आप
को सदा, दासों का भी दास समझना,
समय की कदर जानना, सारे ससार में से
सब से ज्यादा महत्व अपने गुरुदेव, रामजी,
इष्ट देव, को ही देना, यह भी शक्ति है

पश्चाताप करते रहना, आगे आने वाले
समय के लिए विनती करना, यह सब
अपने रामजी को मिलने के साधन
है, ऐसे भजन गा गा कर प्रभु
को रिझाओ, रीझ जायेगे।

भजन (नय्या हवाले करके)

ऐ लो आई मेरी नय्या, सम्भालो रामजी
सम्भालो रामजी, यह है तेरी रामजी
ऐ लो आई - - - - - - -

II

करवाओ अपनी सेवा पूजा, मन चित ला के
हो गये सारे कारज पूरे, दर तेरे आ के
तुम्हरे बिना न सहारा, मेरा कोई रामजी
ऐ लो आई - - -

III

हम जन्मों के कपटी और कामी
आपजी बिना न कोई, हमारा स्वामी
अपना बेड़ा आ के पार लगाओ रामजी
ऐ लो - - -

IV

छुप गया दिन, देखो चढ़ गये तारे
तुम्हरे बिना मेरी बिगड़ी, अब कौन सवारे
जल्दी आओ रामजी, देर न लाओ रामजी

रे लो आई मेरी नय्या

V

दासनदास बन के आये, आप के द्वारे
सारा जग छोड़ के यह बन गये तुम्हारे
तेरे बिन हमरा कोई न सहारा रामजी
रे लो आई मेरी - - -

VI

बाकी जीवन अपने लेखे लगाओ,
जन्मो जन्मो के कर्म मिटाओ!
किरपा कर के बिगड़ी बना,
सभांलो राम जी रे लो आई - - -

VII

नय्या अब यह हो गई पुरानी,
इस मे विकारों का भर गया पानी!
अपनी कृपा से विकार मिटाओ रामजी रे लो

राम राम
कौशल
25.1.2000
11 P.M

आशिक केवल अपने रामजी का हुकम मानते है, प्रभु की आज्ञा है, पाच बार दिन मे प्रार्थना अवश्य करनी है, सवेरे शाम पाच माला "कर कृपा" के मन्त्र की 10 माला श्रीराम नाम की अवश्य करनी है, (आप करवा लेना ऐसे अपने रामजी से प्रार्थना करनी है)

1 निन्दा चुगली नही करवाना।
2 इर्षा द्वेष नही करवाना। (कृपा करना)
3 झूठ नही बुलवाना (कृपा मांगो)
(4) चोरी नही करवाना (कृपा करना)
(5) कड़वा नही बोलेगे (कृपा रखना)
(6) मान अपमान बराबर समझेंगे

आर आप कृपा करेंगी सब मे अपने रामजी को देखे (ज्योत देखे)

समता दृष्टि के लिए विशेष कृपा मांगे

अगर ऐसा जीवन बन जाये तो मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे सब गौण हो जाते हैं फिर हम केवल अपने रामजी के साथ ही रहना चाहेंगे और रहेंगे मानसिक रूप से।
" और कहेंगे गा गा कर "

भजन

मुल्ला तेरी ओ, मलीत नहीं ओ बड़दे
कि आशिकां दी प्रीत बावरी
आशिक भज के सूली ते जा चढ़दे
कि आशिकां दी प्रीत बावरी

II

मुसलमान न रब दा सौदा
हिन्दु न लगदा साला
सब दी इक मुहब्बत लोको
दोहां दा मुँह काला।

न रब्ब तीर्थ मक्के वसदा
न वसदा गुरुद्वारा।
बुल्लेशाह रब्ब ओथे वसदा
जिथे वसदा सतगुरु प्यारा।

बुल्ला तेरीओ।

III

आशिक रब्ब दा हर कोई कहंदा
हथ विच माला फड़ के
आशिक विच खून न रहंदा
कोई अन्दर वेखे वड़ के
हड्डियां फुकियां, कोयला होइआं
दिल कोयला होया सड़ के
मन्सूर तो पुछो मज़ा इश्क़ दा
जो गया सूली चढ़ के

बुल्ला तेरी ओट

IV

राती जागना नकू कहावना
राती जागना कुत्ते
भौंको मुलना बन्द न हुन्दे
जा रौड़ी ते सुत्ते
मालिक दा दर मूल न छडदे
लाव मारना भावें जुत्ते

मुल्ला तेरी ओट

V

ऐसी कृपा हम पर कर दो
आशिक बने हम सच्च के
दूर तेरे तू कदे न दसिये
असी दुनिया विच न फसदे

मुल्ला तेरी

सीताराम राम श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर दुखी गोपाला 27.1.2000
28-01

S M T W T F S S M T W T F S
0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 ... 20 21 22 23 24 25 26 27
28 29 30

श्रीराम

(नाम महिमा)

जब हम अपने भोले भाले मन को नाम की महिमा गा गा कर सुनाते रहते हैं तभी यह नाम की ओर मुड़ जाता है नहीं तो माया इसे नचाती है और दुखी करती रहती है।

भोले बाबा पार्वती से फरमाते हैं

"उमा दारु जोषित की नाईं
सबहि नचावत राम गुसाईं"

आओ तो सब मिल कर, नाम की महिमा गायें और परमानन्द पायें

हरि का नाम सदा सुखदाई (बाबा जी)

कलियुग केवल नाम आधारा (रामायण प्रमाण)

भजन

ओन्हा जन्म जन्म सुख पाइआ
जिन्हां ने तेरा नाम जपया।
जिन्हा नाम जपया, जिन्हा ताप तपया।
ओन्हा समझी गुरां जी, तेरी वाणी
जिन्हा ने तेरा नाम जपया।

II ओन्हा----

जिन्हा मन मारिआ, जिन्हा तन मारिआ
ओन्हा जग तो परम पद पाइआ
जिन्हा ने तेरा नाम जपिआ

III ओन्हा जन्म--

मन हद खुल गई तन सुध भुल गई
ओन्हा नाम दा दीप जगाया।
जिन्हा ने तेरा नाम जपया।

ओन्हा जन्म----

IV

सतसंगां अन्दर मोती हीरे
मिलदे ने पर धीरे धीरे
साडे गुरु जी ने आन सुणाया
जिन्हां ने तेरा नाम जपया

ओन्हा जनम जाम -

V

हमें भी रोज का सतसंग दे दो
अपने नाम का रंग चढ़ा दो
साडे राम जी ने यही सिखाया
जिन्हा ने तेरा नाम जपया

ओन्हा - - -

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पुरी गोपाला

27.1.2000 (3 P.M)

"श्रीराम"

अपने रामजी से, अपने सतगुरु से सदा यह ही मांगो कि हमें सतसंग, सेवा, सिमरण, दे दो प्रेम भाव दे दो। अहमता और ममता मिटा दो। आओ, तो अपने शाहों के शहनशाह रामजी से याचना करें सत की, सद्‌गुणों की जिनमें सदैव सद्‌गुण ही हैं वह भगवत् स्वरूप हैं। यह केवल प्रभु कृपा से ही प्राप्त हो सकते हैं। गा गा कर मांगों

(भजन)

शाहों के शहनशाह हो।
तेरे दर आया सवाली
शान्ति से झोली भर दो
जाये न दर से खाली
शाहों के शहनशाह

II

तूने यह जग रचाया

और सारी अपनी माया
माया से अलिप्त कर दो
बनूं तेरा निष्काम पुजारी
शाहों के —

III

तेरे दर पै जो भी आया
तूने कंठ से लगाया
भरपूर प्रेम दे कर
बिगड़ी तूने सवारी
शाहों के — —

IV

हरि दो जहां के वाली
वरदान दे दो आली
तेरा दर्श अन्तर पायें
यही विनती है हमारी
सेवा से झोली भर दो
जाये न दर से खाली
शाहों — —

V

नहीं चाह राज धन की
नहीं चाहे मुझे भाग की
भक्ति से झोली भर दो
जाये न दर से खाली
शाहों के शहनशाह

VI

तन मन यह धन तुम्हारा
मुझे है तेरा सहारा
मेरी अहमता आप मिटा दो
पूर्ण नम्रता दे दो सारी
सिमरण से झोली भर दो
जाये न दर से खाली
शाहों के शहनशाह

VII

मेरे मात पिता भी तुम हो
मेरे भाई बन्धु तुम हो
केवल तुम संग ही जोड़ी
मैंने सारी रिश्तेदारी

अब प्रेम से झोली भर दो
यही विनती है हमारी

VIII

हरि तुमने अपना बनाया
मेरी दूर कर दो माया
अविनाशी जीव तुम्हारा
तेरा ही हूं पुजारी
सतसंग से झोली भर दो
यह विनती है हमारी

राधेश्यामराम श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर झुकी जयमाला"

10.15 P.M 28.1.2000

S	0	9	23
M	0	10	24
T	0	11	25
W	0	12	26
T	0	13	27
F	0	14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	0
T	4	18	0
W	5	19	0
T	6	20	0
F	7	21	0
S	8	22	0

APRIL 2000

"श्रीराम"

जब हम ऐसे रोज़ अपने रामजी से माँगा करते हैं, कि हे प्रभो, आप हमारी बुद्धि सदा सात्विक रखो, इस मे सदा तूँ ही तूँ रह जाये मैं मेरी, बिल्कुल समाप्त हो जाय, तब हमारा जीवन, सम हो जाता है। समता दृष्टि मे तो सदा आनन्द ही आनन्द है। सम दृष्टि संसार में रखनी है, समवर्ती नही हो सकते संसार का व्यवहार तो वैसे ही चलाना है परन्तु सब मे अपने राम की, प्रभु की ज्योति निहारते हुए, समता भाव रखना है। और ऐसे ऐसे भजन भी नित्य गुनगुनाते रहना है पहले इन्हे याद करना है।

आओ तो, पहले हम मिल कर बोलें।

भजन

किसे नाल राग नही, किसे नाल द्वेष नही
आतमा आनन्द मेरी, कोई वी क्लेश नही

II

समझ नही आऊंदी मैनू, किदे नाल प्रेम जोड़ा
सभो विच राम वसदा, किदे वल्लो मुह मोड़ा
किसे दा तो मेरे वल्लों, आपसी द्वेष नही

आतमा आनन्द

III

हाकिम बना किसे ते नही हुक्म चलाणा मै
किसे दा न दास बना, हथ नू फैलाणा मैं
झूठी इस सराय विच, रहणा हमेशा नही

आतमा आनन्द -

IV

किसे नाल लैणा देणा, स्वारथ व्यवहार नही
बिना अपने राम जी दे, किसे नाल प्यार नही
आतम ज्ञान जेहा होर कोई उपदेश नही

आतमा आनन्द -

V

खुशी नाल फुलना नही, हल के भुलावे कोई
गुस्से नाल डुलना नही, गल करजावे कोई
जोश नही आशा देशा, क्रोध आवेश नही

आत्मा आनन्द ---

VI

अन्दरों ते बाहरो चोला, इको रंग रंगना ए
दिल दी स्पष्ट गल आखणी, नही सजंगना ए
कपट फरेब दा बनना आवेश नही

आत्मा आनन्द ---

VII

चमन जो सच्चा, इक प्रभु दा प्यार है
कान्हू फेर दिल विच, दुई दा विचार है
भुल साहनु सकदा, राम जी दा उपदेश नही

आत्मा आनन्द --

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर दुर्गा गोपाला 29.1.2000
2.40 P.M

III

राम नाम अमृत है। राम नाम चन्दन
राम नाम स्वस्ति। राम नाम बन्धन
राम जी के नाम के हम भी है मतवार
राम जी के ---

IV

राम राम जपो राम ही ध्यायो।
राम नाम प्रेम घर घर जगाओ।
उन्हीं की शरण हो के
बन्धन सब टारे
राम जी के --.

रामजीराम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पुरी गोपाला।

MAY 2000
S 0 14 28
M 1 15 29
T 2 16 30
W 3 17 31
T 4 18
F 5 19
S 6 20
S 7 21
M 8 22
T 9 23
W 10 24
T 11 25
F 12 26
S 13 27

श्रीराम

राम नाम की महिमा, ध्यान की महिमा
अन्तर में मानसिक जाप की विधि केवल
राम जी, ही सिखाते हैं, बताते हैं, जिससे
हमारा जीवन उज्जवल हो जाता है। ऐसे
राम जी की उसतति करते करते
ऐसा भाव भजन के रूप में प्रकट हो
जाता है।

भजन

रब्ब मेरा सतगुरु बण के आया
मैनू वेख लैण दे
मैनू वेख लैण दे नी
मत्था टेक लैण दे
॥ रब्ब मेरा सतगुरु
अरशां तों रह चल के आइआ
रूप नूरानी लै के आइआ

APRIL 2000
M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29 30

एहदा रूप नुरानी मैनू वेख लैण दे
रब्ब मेरा सत्गुरु - .

III

बूटे बूटे पाणी देंदा
सुके बूटे हरे करेंदा
नी एह केहड़ा माली आया
मैनू वेख लैण दे, मत्था टेक लैण दे

IV

जित्थे जा एह चरण धरेंदा
डुबदे पत्थर नी तारेंदा
नी एह केहड़ा तारू आया

मैनू वेख लैण दे
" " " "
मत्था टेक लैण दे
रब्ब मेरा - - -

V

चिट्टा चिट्टा चोला पाया
कृपा धाम विच डेरा लाया।
नी एह कंम सवारगा आया।
मैनू वेख लैरा दे

रब मेरा सतगुरु-

रामजीराम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

29.1.2000
6.20 PM

भजन

सांवरे घनश्याम, तुम तो प्रेम के अवतार हो।
संकटो में फस रहे है, तुम ही खेवनहार हो।
आपका दर्शन मुझे इस छवि से बारम्बार हो।

II

हाथ मे मुरली मुकुट सिर पर, गले में हार हो।
सांवरे --

III

पाप दोषो से भरी नय्या, भवर मे आ पड़ी
थाम लो पतवार, हे गिरधर लो बेड़ा पार हो।
सांवरे ---

IV

नागपद, गज के रुदन पर भागने वाले प्रभु
देवन। निष्फल न मेरी आंसुओं की धार हो।
सांवरे घनश्याम --

श्रीराम

30/4/2000 4 A.M.

श्रीराम

भजन

मेरा दिल है दिवाना राम तेरे लिए
तेरे लिए श्याम तेरे लिए

मेरा दिल है —

II

मेरा मन्दिर में आना जाना तेरे लिए
मेरा दिल है दिवाना राम तेरे लिए

III

चाहे पढ़ूं गीता रामायण, मेरा पढ़ना पढ़ाना
मेरा दिल है दिवाना राम तेरे लिए राम तेरे लिए

IV

चाहे करूं पूजा आराधना,
मेरा करना कराना राम तेरे लिए

मेरा दिल

V

यमुना से मटकी भर लाऊं
मेरा यमुना पे आना जाना तेरे लिए —

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

जोगन बन मैं मस्ती रमाऊ
मेरा मस्ती रमाना राम तेरे लिए
मेरा दिल ---

VII
चाहे करू पूजा आराधन
मेरा करना कराना राम तेरे लिए
मेरा दिल है --

रामजी राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूरी गोपाला।

30.1.2000 4.4 AM

S M T W T F S S M T W T F S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24
25 26 27 28 29 30

श्रीराम

जैसा कि श्री गुरुजी फरमाते है
"नर आप ही है शत्रु अपना
आप ही है मित्र भी"

यह 10 Commandments (निर्देश) अगर जीवन मे धारण करते है तभी हम अपने आप के मित्र बन सकते है, अर्थात हमारा जीवन सार्थक है।

(1) हम हमेशा धार्मिक साहित्य पढते है ?

2. हम सदा सात्विक भोजन खाते है ?

3. हम सदा संतो महापुरुषो का संग करते है ?

4. हमारा रहने का वातावरण शुद्ध है ?

(5) क्या हमने किसी महापुरुष की शरण ली है

6. हम अपना समय ज्यादातर सत्संग तथा परोपकार मे व्यतीत करते हैं ?

7. हम हमेशा शुभ चिन्तन मे रहते है ?

8. हमारा अभ्यास सदा नाम जप तथा साधना है

9. हमारे सत्कार सदा निर्मल है ?

10. हमने अपने गुरु मन्त्र को संभाल कर रखा है ?

रामजी राम राम श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
मेरी ओर तुम्हीं गोपाला।

30. 1. 2000
4.15 AM

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
◊	◊	◊	◊	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊

कीर्तन धुनि

अनदिन केवल कीरतन ध्यातध्यान
गृहस्थ में सोई निवारी॥
"बाबाजी"

गृहस्थ आश्रम में रहते हुए, अगर हम रोज संतो के संग बैठ कर कीरतन करते हैं, और अपने मन को उपदेश देते रहते है तो हमारा जीवन सफल है नहीं तो

धिग धिग खाया
धिग धिग सोया
धिग धिग कापड़
अंग हडांया

"बाबाजी"

सतगुरु हमें धिक्कारते है। इस लिए आओ तो, मिल कर कीर्तन करें रामजी के साथ।

कीर्तन धुनि

बोल हरि, बोल हरि, हरि हरि बोल
केशव माधव गोविन्द बोल 2

II

नाम प्रभु का है सुखकारी
कट जायें जिससे पातक भारी
पी ले तू अमृत रस घोल
केशव माधव

III

चक्रधारी भज हरि केदारम्
मुक्तिदायक परमानन्दम्
हर पल कृष्ण मुरारी बोल

SUNDAY 16

केशव माधव

IV

अर्जुन का रथ आप चलाया
गीता कह कर ज्ञान सुनाया
बोल बोल हित चित से बोल
केशव माधव

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31										

V

मनुआ भज ले आठों याम
हरि नाम में लगे न दाम
जन्म गंवाता क्यों अनमोल
केशव माधव

VI

हरि सिमरत तेरी जाय बलाय
सर्व कल्याण बसे मन आय
सतगुरु के वचन अनमोल
केशव माधव

VII

उठत बैठत हरि हरि ध्याईये
मार्ग चलत हरि गुण गाईये
गुरुवाणी के वचन अनमोल
केशव माधव

VIII

हरि व्यापक सर्वत्र समाना
प्रेम से प्रगट होय मैं जाना

→2000 APRIL TUESDAY 18

रामायण के वचन अनमोल
केशव माधव गोविन्द बोल

IX

उमा कहहु मै अनुभव अपना
सत्य हरि भजन, जगत सब सपना
भोले के वचन अनमोल
केशव माधव —

X

उमा सुनहु ते लोग अभागी
हरि तज होय विषय अनुरागी
भोले के वचन अनमोल
केशव माधव —

रामजीराम राम

श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर तुरी गोपाला"
29.1.2000 3.PM

"श्रीराम"

राम नाम की महिमा सदा गाते रहेगें तभी हमारे अन्दर "श्रीराम" नाम मन्त्र सहज अवस्था से चलेगा।

भजन के रूप मे गाओ।

रामजी के नाम ने तो।
पाथर भी तारे
जो न जपें राम
वह हैं किस्मत के मारे
रामजी के - - -

II

रामजी के नाम को, शिवजी ने ध्याया।
तुलसीदास जी ने, सर्वस्व लुटाया।
हम भी अपने रामजी पै, सर्वस्व वारें
रामजी के नाम

श्रीराम

कीर्तन धुनि

अपने प्रियतम प्यारे की
छवि का दर्शन करते 2

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेवा 2

II

कैसी सुन्दर छवि है प्यारी
मेरे मन को हरने वाली

श्री कृष्ण - - -

III

कैसी सुन्दर छवि है प्यारी
सोये हुओं को जगाने वारी

श्री कृष्ण - -

IV

सुन्दर छवि मेरे मन को भाई
अन्तर ज्ञान की ज्योति जगाई

श्री कृष्ण - - -

V

प्यारी प्यारी छवि मेरे मन को भाय
विवेक वैराग्य और ज्ञान बढ़ाये

श्री कृष्णा - - -

VI

कैसी सुन्दर छवि है प्यारी
लंगड़े को भी चलाने वाली

श्री कृष्णा - - -

VII

यह तो सुन्दर छवि बड़ी प्यारी
माया को भी हटाने वारी

श्री कृष्णा गोविन्द

VIII

प्यारी प्यारी छवि मैं तेरी निहारुं
आनन्दमय मैं जीवन गुजारुं

श्रीराम श्री कृष्णा

हरे कृष्णा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर चले गोपाला 30.1.2000 4.30 AM

भगवत कृपा की अद्भुत महिमा

I

जिसने राम जी की कृपा प्राप्त ली उसे लौकिक पारलौकिक सब उपलब्ध है।

II

भगवत कृपा अति मलिन प्राणी को भी राम जी से मिलने योग्य बना देती है।

III

भगवत कृपा असम्भव को भी सम्भव कर देती है

IV

जिसने राम जी की कृपा का सहारा ले लिया उसे चिन्ता बिल्कुल नहीं होती।

V

साधक राम जी की कृपा से भवसागर अनायास ही पार कर लेता है।

VI

जिसने केवल भगवत कृपा का सहारा लिया उस के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।

VII

राम जी कृपा में ऐसी चमत्कारी शक्ति है कि क्षण भर में भगवान से मिला देती है।

VIII

राम जी की कृपा से विशुद्ध अनुराग पैदा होता है।

IX

जिसने अपना बल न लगा कर, केवल भगवान की कृपा का भरोसा लिया, असम्भव भी सम्भव हो गया।

X

जिसे राम जी की कृपा पर पूरा विश्वास है उस के दुख क्षणों में दूर हो जाते हैं।

XI

रामजी की कृपा, रामजी से मिला देगी
आलौकिक प्रेम देगी।

XII

भगवान की कृपा मांगने वाले का जीवन
अवश्य ही सफल होगा।
इसलिए कृपा मांगो।

रामजीरामराम

श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पुरी गोपाला॥"

30. 1. 2000
SAM

S		14	28
M	1	15	29
T	2	16	30
W	3	17	31
T	4	18	
F	5	19	
S	6	20	
S	7	21	
M	8	22	
T	9	23	
W	10	24	
T	11	25	
F	12	26	
S	13	27	

"श्रीराम"

बांके बिहारी रे, दूर करो दुख मेरा
गिरवर धारी रे, दूर करो दुख मेरा

II

जो भी तेरे दर पे आवे, उस के सब दुख दूर हो जावें
मैं आई शरण तिहारी रे, दूर करो दुख मेरा

III — श्री बांके ---

सारे जग की मैं ठुकराई, अब तो तेरी शरण में आई
राखो लाज मुरारी रे, दूर करो दुख मेरा

IV — बांके बिहारी-

मीरा अहिल्या गणिका तारी, सब ही तूने पार उतारी
आ गई मेरी बारी रे, दूर करो दुख मेरा

V — बांके ---

मोर मुकुट पिताम्बर धारी, संग में सोहे राधा प्यारी
दोनों की बलिहारी रे, दूर करो दुख मेरा

रामजीराम — श्रीराम 30.1.2000 8 AM

श्रीराम

अपने प्यारे प्यारे बांके बिहारी को अपने सतगुरु देव भगवान को, आत्मा के द्वारा निमन्त्रण, जा जा कर Invitation दे रहे है ।

भजन

तर्ज – मेरे घर आना सावरिया

तोहे जाने न दूंगी

मेरे मन मे ही रहना मेरे रामजी
तोहे जाने न दूंगी, 2
राखुंगी तोहे, जनमो तक,
तोहे जाने न दूंगी
मेरे मन मे – – –

II

कृपा मागुंगी केवल तुम्हारी
तेरे चरणो पे जाऊ बलिहारी
तेरे मे ही लीन हो जाऊंगी
तोहे जाने – –

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर बुरी जो वाला।
कृपा मांगूगी तुम्हारी
तोहे जाने न दूगी
मेरे मन मे ही रहना -

III

तेरी कृपा का हम को भरोसा।
तेरी कृपा से क्या क्या नही होता।
सदा शरण मे रहूंगी तुम्हारी
तुम्हे जाने न दूंगी
मेरे मन मे रहो - -

IV

श्रद्धा विश्वास मेरा सदा ही बढ़ाना।
चित चरणों मे सदा ही लगाना।
मै तो जन्मो की जोगी तुम्हारी
तुम्हे जाने न दूगी
मेरे मन मे ही रहे।

S	o	11	25
M	o	12	26
T	o	13	27
W	o	14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	o
S	4	18	o
M	5	19	o
T	6	20	o
W	7	21	o
T	8	22	o
F	9	23	o
S	10	24	o

JUN 2000

रामसिमरन
श्रीराम 31·1·2000 2 P.M

"श्रीराम" - 104 -

श्रीराम, श्रीराम कहते चलो,
सुख हो, या दुख हो, सहते चलो। 2

II

श्रीराम जी तो मेरे प्राण आधार,
राम जी बिना, मेरा जीवन निस्सार।
नाम धन का खजाना, बढ़ाते चलो।
श्रीराम, श्रीराम - - -

III

श्रीराम जी के बिना आस नहीं,
राम जी के बिना विश्वास नहीं,
श्रद्धा और प्रेम बढ़ाते चलो श्रीराम। - -

IV

श्रीराम जी तो, मेरे घट घट वासी,
श्रीराम जी तो, मेरे सद अविनाशी,
इन्हीं को हृदय में, बसाते चलो।
श्रीराम - - -

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
◊	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊

जागो जागो अब सोना नही,
हीरा जन्म यूं ही खोना नही।
भजन सिमरण अब बढाते चलो।
श्रीराम श्रीराम - - -

सुख दुख दोनो सम हो जाये,
आनन्दमय यह जीवन हो जाये।
राम नाम की मस्ती बढाते चलो।
श्रीराम श्रीराम - -

रामजी रामराम श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला,
तेरी ओर दृष्टि गोपाला"

S	◊	11	25
M	◊	12	26
T	◊	13	27
W	◊	14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	◊
S	4	18	◊
M	5	19	◊
T	6	20	◊
W	7	21	◊
T	8	22	◊
F	9	23	◊
S	10	24	◊

भजन

मन्दिर में रहते हो भगवन,
कभी बाहर भी आया जाया करो।
मैं रोज़ तेरे दर आती हूं,
कभी तुम भी मेरे घर आया करो।
मन्दिर मे----

II
मै तेरे दर की जोगी हूँ
तेरे बिन मै सदा वियोगी हूँ।
तेरी याद मे आंसू बहते हैं,
इतना न मुझे तड़पाया करो।
मन्दिर मे---

III
आते क्यो प्रभु जी नज़दीक नही,
इतना तो सताना ठीक नही।
मैं दिल से तुम को चाहती हूँ,
कभी तुम भी मुझे अपनाया करो।
मन्दिर मे---

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31										

मैं दीन हूँ, दीनानाथ हो तुम
सुख दुख में हर दम साथ हो तुम
मिलने की चाह की होश करूँ
कभी तुम भी मिला मिलाया करो।
मन्दिर में ---

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूर्ण जोवाला।

30.1.2000
9.15 A.M

श्रीराम -108-

"चेतावनी"

भजन

किये जा राम का सिमरण,
अगर मुक्ति को पाना है।
अरे नादान यह वह घर है,
जो इक दिन छोड़ जाना है।

II

लगा कर प्रीति विषयों से,
जन्म वृथा गवाता है।
मिला अनमोल यह हीरा,
यह फिर न हाथ आता है।

III

महल न साथ जायेंगे
न जाये बाग बागीचे
किसे न संग जाना है
यह मतलब का जमाना है

छोड़ संसार के बन्धन
लगा ले प्रीति सिमरण से
बिना भगवान के बन्दे
न तेरा कोई ठिकाना है

रामजी रामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

30.1.2000
9.20 AM

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
◊	◊	◊	◊	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊

श्रीराम – 110

भजन (अनुनय विनय)

प्रभु अपने चरणो के काबिल बना दो,
यह जीवन हमारा तुम्हारे लिए हो। २

II

हो करुणा के सागर, दया के हो दाता,
तुम्ही जग के पालक, तुम्ही हो विधाता।
यह सोया है मनुआ, इसे तुम जगा दो।

प्रभु अपने ----

III

मै पथ से गिरु तो मुझे थाम लेना,
दया कर के सद्बुद्धि देते ही रहना,
जो सच्चा हो मार्ग वही तुम दिखा दो।

प्रभु ---

IV

तुम्हारे हवाले है जीवन की नय्या,
इसे पार कर दो हे मेरे खिवैया,
कही डूब जाये न, इस को बचा लो।

प्रभु ---

V

दर्श को मै आया हूँ जन्मों का मारा
भटकता है मनुआ, यह अब भी तुम्हारा
इसे वश मे, करने की शक्ति भला दो
प्रभु अपने चरणों — —

VI

तेरी कृपा से क्या क्या नही होता
जन्म जन्मान्तरों की मैल अब धोता
कृपा जल सदा, अब मुझ पै बरसा दो

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पुकारी जो पाला

31.1.2000 8 AM
कृपाधाम

श्रीराम

भजन

अपने राम जी से प्रेम भरी
बातें तथा अनुनय विनय

जन्म देने वाले तू इतना तो बोल रे
कैसे चुकाऊं इन स्वांसों का मोल रे।

II

तेरी कृपा से मिला मुझ को यह नर तन
जिस में बसाऊं तुझे, दिया है मुझे वह मन
तन की खोली आँखें, मन की भी खोल रे।
कैसे चुकाऊं ----

III

मैंने किया न कोई, दान व धरम
दिल से भरे हैं मेरे सारे करम
नाम भुलाया मैंने तेरा अनमोल रे
कैसे चुकाऊं -

मद में हमेशा रहा, मैं सदा ही चूर,
मंदिरों से भगवन, मैं रहा सदा ही दूर
किसी से न बोले, मैंने मीठे मीठे बोल रे
कैसे चुकाऊं - - -

IV

अब तो मैं आन पड़ा शरण में तेरे स्वामी
आप समरथ प्रभु अन्तरयामी
शेष मेरा जन्म व्यर्थ न जाय अनमोल रे

कैसे चुकाऊं - - -

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर मुड़ी गोपाला।

30.1.2000
8.10 AM
कृपाधाम

अपने मन को सदा जगाते रहना है
अपने रामजी को, अपने इष्टदेव को सन्मुख देखते हुए अपने मन को वैराग्य दिलाते हुए समझाते रहो, क्योंकि रामजी ही तो श्रीकृष्ण जी के रूप में समझाते है।

"या निशा सर्वभूतानाम्
तस्यां जागर्ति संयमी"

श्री कृष्ण जी

वैसे जीव मात्र को भी तो सतगुरु ही जगाते है
कृष्णम् वन्दे जगद्गुरुम्
यह कैसे जगाते हैं, इस भजन के द्वारा आप ऐसे अनुभव करो कि रामजी आप के सामने खड़े हो उन का हाथ भरा हो तुम्हारे सिर पर, और कह रहे हैं अपने को सावधान कर के जागो।

भजन

जागो सोने वालो जगाने वाला आ गया।
अन्तरमेंही दर्शन कराने वाला आ गया।

II

जाग जाग जाग मनुआ, अब तो जाग रे
रामजी के मिलने से, खुल जायें भाग रे
जागो सोने ---

III

हरि नाम रे मना गाय ले, जो सगी हैं तेरा।
अवसर बीतिओ जात है, कहा मान ले मेरा।
जाग जाग ---

IV

जाग जाग मन नींद न करिए, अब तो रौशन होया रे
काल नगाड़ा सिर पर बाजे,
नींद पलांग क्यों सोया रे
जाग जाग ---

V

जाग रे मना जाग ले, कहा गाफिल सोया
जो तन उपजिआ साथ से, सो भी संग न होया
जागो सोनेवाले --
जान बूझ के बावरे, तैं काज बिगारिओ
पाप करत सकुचिओ नहीं, नह गरब निवारिओ

अब भी शरण में आ जा, ओ मनुआ मोरे
जागो सोने --
लोक परलोक सवारेगा, तेरे रामजी प्यारे
जागो सोने वाले।

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूरी गोपाला।

31.1.2000
2.10 P.M
[illegible] धाम

"करवाचौथ त्यौहार"

पति पत्नी का आपस मे सच्चा प्रेम, विश्वास होना ही करवाचौथ है
जैसा कि बाबा जी फरमाते है

"धन पिर एह न आखिए
बहरा इकट्ठे होय.
एक ज्योति दुई मूरति
धन पिर कहिए सोय"

हर साल करवाचौथ आता है परन्तु हम लोग केवल व्रत तक ही रह जाते है।
इस भजन से राम जी चेतावनी दे रहे है
कि हमारा जीवन कैसा होना चाहिए
क्योंकि गृहस्थआश्रम सब से अच्छा आश्रम है।

अनदिन कीर्तन कथा व्याख्यान
गृहस्थ मैं सोई निवारी॥ (बाबा जी)

"करवाचौथ का भजन"

आया करवाचौथ त्यौहार,
मेरे सतगुरु मेरे रामजी मेरे नाथ।
मिल के बटाओ, सब करवैरे।

II

यह पर्व है आपसी प्रेम का,
पति पत्नी के सुन्दर दृढ़ नेम का।
आपसी द्वैत भाव न लाना।।
मिल के हरि चरणों मे आना।।

मिल के बटाओ - - -

III

एक ने कही दूसरे ने मानी,
बाबा नानक कहे दोनो ज्ञानी।
दोनों एक दूसरे को मानो,
ज्यादा दानवीन न दानो।

मिल के बटाओ -

IV

जितना पति है पत्नी को प्यारा,
उतनी आत्मा परमात्मा को प्यारी।
मिल के दोनो व्रत निभाओ,
अपने मन को शुद्ध बनाओ।
मिल के बढ़ाओ—

V

शृंगार केवल पति के लिए करना,
अपने सद्गुरों से खुश उसे रखना।
दोनो मिल के हरि गुण गाओ,
अहंता का भारी रोग मिटाओ।
मिल के बढ़ाओ—

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
मेरी ओर चुरा गोपाला

31.1.2000
2.20 PM कृपाधाम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला॥
तेरी ओर चुरी गोपाला।"

मेरे प्रभु प्यारे की कृपा तो सब पर है क्योंकि उन का नाम ही कृपाधाम है। जब हम "कर कृपा" का मन्त्र बोलते है तो हमें इस प्रकार की कृपा मांगनी है? गा गा कर

"क्योंकि जिन गाया
तिन पाया मान"

नानक गाविए गुणी निधान
गाविए सुणिए मन रखिये भाओ
दुख परहर सुख घर लै जाओ॥

जब सारे मिल कर गाते है तो सब प्रकार के सुख के अधिकारी हो जाते है

रामजीरामराम

श्रीराम

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30								

भजन

ऐसी किरपा, ऐसी किरपा ऐसी किरपा
मो पै करो 2

II

संतो का संग हो, नाम का रंग हो।
प्रीति अगाध हो, प्रेम हो।
ऐसी किरपा ---

III

प्रभु की लगन हो, मन तुम में मगन हो।
हृदय गगन हो, अन्तर प्रकाश हो।
ऐसी किरपा---

IV

कोई भी देश हो, कोई भी वेश हो
मन तुम में प्रवेश हो, तेरा ही वास हो
ऐसी किरपा. --

V

तेरी ही चाह हो, भक्ति की राह हो।
मन न उदास हो, मेरे तो तुम ही हो

VI

विषयी न मन हो, स्वस्थ यह तन हो,
मन मन्दिर में दर्शन दो

VII ऐसी किरपा — —

कैसा भी रंग हो, कोई भी ढंग हो
हर्षित अंग अंग हो कृपा करो
ऐसी किरपा — — —

रामजीराम राम

श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर मुड़ी गोपाला"

31.1.2000
11 P.M
कृपाधाम

S		11	25
M		12	26
T		13	27
W		14	28
T	1	15	29
F	2	16	30
S	3	17	
S	4	18	
M	5	19	
T	6	20	
W	7	21	
T	8	22	
F	9	23	
S	10	24	

भजन

श्रीराम जी जिन का नाम है,
हृदय जिन का धाम है।
ऐसे पूर्ण गोपाल को,
मेरा बारम्बार प्रणाम है।

II

जो सब के मन को हरते हैं
और नाम खजाना रखते हैं
ऐसे लीलाधारी को,
मेरा बारम्बार प्रणाम है।

III

कभी राम जी बन कर आते हैं
कभी मोहिनि छवि दिखाते हैं
ऐसे मनमोहन प्यारे को
मेरा बारम्बार प्रणाम है

श्रीराम - 124 -

IV

कभी भोले बाबा बन जाते हैं,
वैराग्य का पाठ पढ़ाते हैं।
ऐसे बहुरूपिया भगवान को,
मेरा बारंबार प्रणाम है।

V

कभी नारायण हरि बन जाते हैं,
शंख चक्र गदा पदम दिखाते हैं।
ऐसे विष्णु रूप को,
मेरा बारम्बार प्रणाम है।

VI

गुरुनानक रूप में भी आते हैं
गुरुवाणी रहस्य समझाते हैं
ऐसे पूर्ण सतगुरु को
मेरा बारम्बार प्रणाम है

रामजीरामराम श्रीराम
1.2.2000 8AM

भजन

(मन को चेतावनी)

अपने मन को सदैव समझाते रहे कि यह हरि नाम के लिए, आलस्य न करे, और परिवार को बड़ा नही समझे, सतसंग की ओर, अपने प्रभु की ओर ज्यादा ध्यान दे क्योंकि बुढ़ापे मे, परलोक मे कोई साथ नही देता।

भजन

मन मूर्ख आड़ियां करदा
नही भजदा श्याम प्यारे नू २
मै कई वारी समझाया।
तू छड दे नम्बरदारी नू

II

इक दिन आखिया मैंड़े मन नू
चल कीरतन नू चलिए

II

रहे मन आलस्य करदा
नहीं छडदा नींद प्यारी नू

III

मन मूर्ख ---

जिथे होवे निंदिया चुगली
दौड़ी दौड़ी जान्दा
जिथे होवे कथा कीरतन
ओथे नहियो जान्दा
मैं कई वारी समझाया
तू छड दे नाबरदारी नू

मन मूर्ख ---

दोते पोते बड़े लाडले
घुट घुट, सीने लान्दा
चलदी वारी, कोई न पुछदा
दरगाह विच जोते खान्दा
मैं कई वारी समझाया
तू छड दे नाबरदारी नू

हमें अपने राम जी से यही प्रार्थना करनी है, कि हमें भी वैसी खुमारी चढ़ा दो जैसी आप को चढ़ी रही

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात हर समय हमारा ध्यान अगर परमात्म तत्व में रहता है तो जीवन कमल की तरह खिला रहता है, अपने राम जी का प्रेम शेष सारे संसारी प्रेम को गौण कर देता है।

जा को हरि रस है आइओ।
सो अनरस नाही लपटाइओ
"बाबाजी"

जैसी धुन एक प्रभु प्यारे को लग गई वह इस भजन में इस प्रकार वर्णन कर रहा है।

"श्रीराम"

हरि जी से, मिलने की इक धुन लागी है
इसी धुन में मैं तो जीये जा रहा हूं
प्यारे राम जी से मिलने की इक धुन लागी है,
इसी धुन में, मैं तो जीये जा रहा हूं।

II

नहीं जानता, क्या करनी न करनी,
जो सतगुरु कराए, किये जा रहा हूं।

III

नहीं जानता क्या लाभ क्या हानि,
जो सतगुरु दिलाये लिए जा रहा हूं।

IV

नहीं जानता, ध्यान जप और समाधि,
मैं प्रेम हरि से किये जा रहा हूं।

V

नहीं आता ध्यान, प्रभु का हृदय में,

→ 2000 JUNE 15

मगर फिर भी ध्यान किये जा रहा हूं

VI

दयामय करेंगे दया दीन पर भी,
मैं खुद को भरोसा दिए जा रहा हूं।

VII

न जाने, यह कब गिर पड़ेंगे यह आंसू,
मैं कब से, आंसू पीये जा रहा हूं।

VIII

जब तक है इस तन मे श्वास बाकी,
मैं तब तक, हरि को बुलाता रहूंगा,
सुना के रहूंगा, मैं दिल की पुकार,
इसी जिद के सहारे, जीये जा रहा हूं।

IX

न हो जाये बदनामी, मेरे हरि की
कि लोग कहते हैं, तुम को दीनो के नाथ
करुणा के सिन्धु, अनाथो के नाथ

कि राखो हरि अपने, भक्तों की लाज

८

सदा खैर मंगा सोरिया मैं तेरी
दुआ न कोई होर मंगदी
तेरे चरणा च आखिरी हिचकी
दुआ न कोई होर मंगदी होवे मेरी

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी जोवाला

2.1.00
12 Noon
कृपाधाम

"श्रीराम" -131-

हरि चरणां नू छू के कसम असीं खावांगे
बनी रहे तेरी कृपा, तोड़ निभावांगे

II

एह तां प्रेम दा सागर है
भर लो जिन्हे भरनी
एथों प्रेम दी गागर है
असीं वी एथों गागर
भर लै जावांगे
बनी रहे तेरी किरपा
तोड़ निभावांगे

III

SUNDAY 18

गढ़ो प्रेम दियां पाइयां ने
एह नहीं टुटन लगियां
तासों कस के पाइयां ने
एहना गढ़ां नू हर वी पक्का बनावांगे
बनी रहे तेरी कृपा तोड़ निभावांगे

तू मेरा समरथ स्वामी है
अन्तरयामी प्रभु
तेरी प्रीति प्यारी है
तोड़ निभा दोगे
पूरी आशा हमारी है
अन्त समय मे भी तेरा ही नाम ध्याओ॥
बनी रहे तेरी किरपा तोड़ निभाओ।

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूरी गोपाला॥

1·45 AM
2·9·2000
कृपाधाम

राम नाम की महिमा सदा अपने मन को गा गा कर बतानी चाहिए ताकि हमारे अन्तर मन मे "श्रीराम" नाम जाप चलता रहे। भजन के द्वारा समझाओ।

भजन

राम राम राम कहो राम राम राम
राम राम राम श्रीराम राम राम
आत्मा के प्यारा प्रिय राम राम राम राम
अन्तर में उगर जैसे राम राम राम
बाहर भी देखु श्रीराम राम राम
हर समय जपा करु राम राम राम
मन मेरे मे बस जाय राम राम राम
जीभ पर भी सदा रहे राम राम राम
सतयुग मे राम हुए राम राम राम
द्वापर मे श्याम हुए श्याम श्याम श्याम
कलियुग मे केवल रामजी का नाम

श्रीराम

श्रीराम नाम का जाप करने से क्या क्या लाभ होता है ऐसे प्यारे प्यारे भजन गा गा कर इस मन को समझाते रहो तो शान्ति प्राप्त होगी, पाप ताप मिट जायेंगे, माता पिता से भी बढ़ कर प्रेम मिलेगा, सच्चा जीवन धन प्राप्त होगा। जीवन सार्थक हो जायेगा। मन को चेतावनी!

भजन

राम कहो, राम कहो, राम कहो राम
" " " " " " " "

II

परम शान्ति सुख निधान दिव्य राम नाम
राम कहो राम कहो - - - -

III

पाप कटें दुख मिटें ले के राम नाम

राम कहो राम जपो राम राम राम

IV

निराधार को आधार एक राम नाम
राम कहो राम कहो राम राम राम

V

भक्तजनर जीवन धन एक राम नाम
राम कहो - - - - - -

VI

माता पिता बन्धु सखा सब ही राम नाम
राम जपो राम जपो - - - -

VII

महादेव सतत जपत मन्त्र राम नाम
राम जपो राम जपो - - - - - -

VIII

परम तत्व परम इष्ट मित्र राम नाम
राम कहो राम कहो - - -

S M T W T F S S M T W T F S
○ ○ ○ ○ ○ ○ 1 2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29 30 31 ○ ○ ○ ○ ○

श्रीराम

चेतावनी

प्रकृति भी शान्त रहे

जब भी नयी सदी प्रारम्भ होती है तो प्रकृति में उद्द चढ़ाव उतार, आ सकते हैं। इस का उपाय केवल प्रार्थना या नाम जप है, अगर हम साथ साथ यह जाप करते रहते है तो शान्ति रहती है क्योंकि माया संसारी जीवों से पाप भी करवाती रहती है

"माया महा ठगनी हम जानी"

यह सारा संसार एक घर है, (बाबा जी) परमात्मा का, इस के अगर थोड़े से बच्चे भी जाप करते हैं तो सारा संसार शान्त रह सकता है।

जैसा कि पूज्य बाबाजी आई

→2000 JUNE SATURDAY

कि अखंड नाम यज्ञ करे
तो हमने कहा कृपा धाम मे तो चार
साल से इस एक मन्त्र को -
" कर कृपा प्रभु दीन दयाल॥
तेरी ओट पूर्ण गोपाल "
को अखंड यज्ञ तो चल रहा है। इस से
असंख्य लोगो को शान्ति प्राप्त हुई
है, तो आवाज आई कि, यह नयी सदी
जून के महीने तक जारी है इस लिए
इस के साथ
" जगत जलंधा राख लै
अपनी कृपा धार "

SUNDAY 25

इस का पाठ मन्दिरो मे घर घर में
करवाओ तो शान्ति हो जायेगी
जब इस का जाप करना है तो
चार बातें याद रखे।

I

एक जगत हमारे अन्दर का संसार है (मन) जिस मे, कई जन्मों के संस्कार ऐकत्रित है, उस से यह अशान्त रहता है हे प्रभो! आप अपनी कृपा धार कर इसे शान्त रखिये, हे पूरी गोपालजी दीनदयाला जी कृपा रखो।

II

एक हमारे बाहर का परिवार इस संसार मे आये तो, यह छोटा सा परिवार बन प्रकृति ने बना दिया, इस परिवार पर भी अपनी कृपा धार कर रखनाजी ताकि मेरा मन इन के द्वारा उद्विग्न न हो, अपनी पूरी अन्तर शान्ति से आप को भी जान सकूं।

III

एक हमारे आस पास का वातावरण है, पड़ोसी हैं, और दूसरे रिश्तेदार वगैरा, उन की बुद्धि में भी आपने ही शान्ति देनी है। उन मन पर भी अपनी कृपा धार कर रखना। ताकि मेरा मन पूरी रूपेण आप ही निरन्तर लगा रहे।

IV

सारे संसार में शान्ति रखिये कोई प्राकृतिक घटना भी अशान्ति न करे।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामया"

अपनी कृपा सब पर धार कर रखना।

ऐसा भाव मन में रखते हुए
यह पाठ जून के महीने तक चलेगा।
आप सब भी इस पाठ को करें, कम
से कम 5 घरों ज्योति जगा कर
एक आसन लगा देना है, उस पर
बारी बारी एक भगत तो बैठा ही
रहेगा।

पूर्ण विश्वास है, सारा संसार
शान्त रहेगा। मन्त्र ऐसे बोलना है

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी जोवाला।
जगत जल रहा जाये लैं,
अपनी किरपा धार

राधेश्याम राम
श्रीराम

3.2.2000
12 Noon

भजन (कृपा माँगे)

मांगा है, मैने श्याम से
वरदान एक ही
तेरी कृपा बनी रहे, जब तक है जिन्दगी

II

जिस पर प्रभु का हाथ था, वह पार हो गया
जो भी शरण मे आ गया, उद्धार हो गया
जिस को भरोसा श्याम पर, डूबा कभी नही
मांगा है मैने —

III

कोई समझ सका नही, माया बड़ी प्रबल

जिसने प्रभु को पा लिया, वह ही है सबल
जिसकी इजाजत के बिना पत्ता हिला नही
मांगा है मैने —

IV

ऐसे दयालु श्याम से, रिश्ता बना लो
मिलता रहेगा आपको, जो कुछ भी चाह लो

ऐसा करिश्मा होगा, जो हुआ नही
माँगा है ---

IV

कहते है लोग, जिन्दगी किस्मत का खेल है
किस्मत बनाना भी मगर, उस की ही खेल है
कर ले यकीन अब तेरा ज्यादा समय नही
माँगा है ---

V

माँगा है मैने रामजी से वरदान एक ही
बनी रहे तेरी कृपा जब तक है जिन्दगी

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला "

Feb 12. 1 PM

-भजन-

याद कर ले, हरि को याद कर ले
दिल की दुनिया आबाद कर ले 2

II

सच्चे सतगुरु से रहमत मिलेगी
तेरी बिगड़ी यह जिन्दगी बनेगी
नाम जप ले, हरि का नाम जप ले
दिल की - -

III

सच्चे सतगुरु की यही है निशानी
अपने सेवक पर रखें निगरानी
प्यार कर ले हरि से प्यार कर ले
दिल की दुनिया आबाद कर ले

रामजी राम राम

ओ३म् राम

Feb 12 1 P.M

श्रीराम 1791

भजन

राम जी, मेरे राम जी, आया हूँ मैं, बड़ी दूर से

ओ मेरे कान्हा प्यारा, देना सहारा।

मुश्किलों से पाया, मैंने कृपा धाम तुम्हारा।

II राम जी मेरे, राम जी

कृपा धाम वाले श्याम तुम्ही कहलाते हो

संसार में बस काम, तुम्ही तो आते हो

आठो याम अब नाम, तुम्ही जपाते हो

बन्सी की तान, तुम्ही सुनाते हो

ओ मेरा प्यारा, कान्हा---

मुश्किलों से ढूंढा मैंने ---

III

हरदम तेरा ध्यान, लगन हो तेरी है

कर कृपा की माला, मैंने फेरी है

दीनानाथ दयाल बेड़ा पार करो

काम क्रोध मोह लोभ, [illegible]

ओ मेरा कान्हा प्यारा

IV

कृपा धाम सा ऐसा कोई धाम नही
राम नाम सा पावन, जग में नाम नही
हमें तो तेरी भक्ति सिवा कोई काम नही
कर ले भजन तू प्राणी, लगता दाम नही
ओ मेरा कान्हा प्यारा
देना सहारा
भक्तों से पाया, मैंने कृपाधाम
राम जी, मेरे राम जी, आया हूँ मैं

राम जी राम राम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला

1.3.2000 12.45 P.M

श्रीराम जी का सिमरन किया करो।
प्रभु के सहारे जीया करो।
जो दुनिया का मालिक है
नाम उसी का लिया करो।

II जो दुनिया---

मानुष तन तुमने, यह बड़े भाग्य से पाया है
विषयों में पड़ कर के बन्दे, हीरा जन्म गवाया है
दुष्ट का संग न किया करो, सज्जनों से गुण लिया करो।
जो दुनिया का --

III

न जाने चलते २, कब रुक जायेंगे श्वासें।
इक ही पल में खत्म हो जाये, जग का यह तमाशा
आठों याम जप किया करो। प्रभु के सहारे जीया करो।
जो दुनिया का

IV

हर प्राणी से प्यार करो, सब में वही समाया है

→2000 AUGUST

सारा संसार है यह अपना, कोई नहीं [illegible]
द्वैत भाव न किया करो, दुख न किसी को दिया करो।
जो दुनिया का - -

V

सच्चा सुख है प्रभु भक्ति में, बात न समझो झूठी
वही अमरपद पायेगा, जो पीयेगा नाम की बूटी
अमृत रस तुम पिया करो, प्रभु के सहारे जीया करो।
जो दुनिया का - - -

सेवा सिमरण सतसंग, करके, जीवन सफल बनाओ जी
विषय विकारों को तुम छोड़ो, रामजी को अपना बनाओ जी
व्यर्थ की ज्यादा बातें न बना कर, बात काम की किया करो।

SUNDAY 6

रामजीराम राम श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाल॥
तेरी आस पूरी हो वाला

1. 3. 2000 1 P.M

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30							
					1	2	3	4	5	6	7	8	9

श्रीराम " 170

सवेरे जल्दी उठने के लिए चेतावनी

- भजन -

रे मन जाग जाग जाग 2
तेरे खुल जायेंगे भाग 2

II

प्रातः काल जप नाम मुरारी
कभी न होय तेरी जिन्दड़ी खवारी
तेरे पूरे होंगे भाग 2

III रे मन जाग - - -

रामायण गीता पुकारे
अब तो देख ले प्रभु के नजारे
अमृत वेले, मिले प्रभु अनुराग

IV रे मन जाग

अल्पआहार और थोड़ी निद्रा
कभी न आवे तुम को तन्द्रा

अन्त में आगा जाये यमराज

II

रे मन जागा - - .

अब तो कर ले नेक कमाई
उमरिया तेरी बीती जाई
सतगुरु कहत पुकार

रे मन जागा जागा - -

रामजी राम राम श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पुकारे गोपाला॥

1.3.2000 3 P.M

S	◊	10	24
M	◊	11	25
T	◊	12	26
W	◊	13	27
T	◊	14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	◊
M	4	18	◊
T	5	19	◊
W	6	20	◊
T	7	21	◊
F	8	22	◊
S	9	23	◊

राम श्रीराम राम

कृपा धाम की महिमा

प्यारा प्यारा कृपा धाम
मिलेगें कृष्णा, मिलेगें राम

II

आओ आओ कृपा धाम
मिलेगें कृष्णा मिलेगें राम
प्यारा प्यारा---

III

गुरुवाणी गीता रामायण
का पाठ नित्य होता
जीव यहां आ कर के
जन्मों की मैल धोता
आ के तुम भी करो स्नान
मिलेगें कृष्णा---

S	0	13	27
M	0	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	0
S	5	19	0
S	6	20	0
M	7	21	0
T	8	22	0
W	9	23	0
T	10	24	0
F	11	25	0
S	12	26	0

IV

यहाँ बैठ कर प्राणी मन से
गुरु मन्त्र है जपता।
मन में हरि के दर्शन होते
पूर्ण मनोरथ करता।
तुम भी कर लो पूर्ण काम
मिलेगा छुटकारा ---

V

कृपाधाम में कई सालों से
नाम यज्ञ है होता
अमृत बनता नाम यज्ञ से
सारे रोगों को खोता
अगर चाहो तुम निरोगता।
इस को बना लो अपना धाम
मिलेगा छुटकारा ---.

श्री राम जी राम राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी आस पूर्ण गोपाल।

श्रीराम
1.3.2000 4 P.M

- भजन -

मन चलो चलें कृपाधाम
कि श्रीराम श्रीराम गायेंगे
श्रीराम श्रीराम गायेंगे
हरि ॐ हरि ॐ गायेंगे

II मन चलो - - - -

कृपा धाम में नारायण हरि हैं
नारायण हरि मेरे प्यारे हरि हैं
वह तो शंख बजाते दिन रैन
कि हरि ॐ 2 गायेंगे

III मन चलो - - -

कृपाधाम में राम जी रहते
राम जी राम राम सब को कहते
सतसंग करते सुबह शाम
कि श्रीराम श्रीराम गायेंगे

S	◊	13	27
M	◊	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	◊
S	5	19	◊
S	6	20	◊
M	7	21	◊
T	8	22	◊
W	9	23	◊
T	10	24	◊
F	11	25	
S	12	26	

IV

कृपा धाम की संगत न्यारी
संगत न्यारी, प्यारी प्यारी
बोले जय श्रीराम
कि श्रीराम श्रीराम गायेंगे

V मन चलो - -

कृपा धाम में अमृत मिलता
सारे रोग शोक यह हरता।
आओ पाओ विश्राम
कि श्रीराम श्रीराम गायेंगे।

VI मन चलो चलो

कृपा धाम में किरपा मिलती
कृपा से दिव्य दृष्टि मिलती
साकार दिखते भगवान
कि श्रीराम श्रीराम गायेंगे

राम जी राम राम
श्रीराम
1.3.2000 4 P.M.

मन — —

S	0	10 24
M	0	11 25
T	0	12 26
W	0	13 27
T	0	14 28
F	1	15 29
S	2	16 30
S	3	17 0
M	4	18 0
T	5	19 0
W	6	20 0
T	7	21 0
F	8	22 0
S	9	23 0

श्रीराम

भजन (कृपा धाम)

राखो राखो जी कृपानिधान
मैं तो आई हूँ कृपा धाम

II

कृपा धाम में राम जी बैठे 2
देखो लगा कर ध्यान 2

III राखो ----

राम जी मेरे अन्दर बैठे 2
सब के सवांरे काम 2
राखो ----

IV

श्रीराम, श्रीराम, यह जपवाते
कर कृपा का देते नाम 2
राखो ---

V

कृपा तो इन में बहुत भरी है
ले लो न लगता दाम 2

राखो राखो

VI

बांके बिहारी यह बन जाते
नारायण को चक्र चलाते
रूप में हैं यह राम
देखो लगा कर ध्यान 2

राखो राखो ---

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

1.3.2000 7 P.M

श्री राम

पजांबी भजन (कृपाधाम)

कृपा धाम दीयां महिमा बतोरीयां
मैं जांवा वारे ही वारे
हेर राम जी दा रूप निराला
कि भागां वाला दर्श करे

II

एथे हर वेले कृपा वंडीदी
झोली सब दी कृपा नाल भरीदी
कि कृपा पा सगंत तेर
राम जी दा रूप निराला
कि भागां वाला दर्श करे

कृपा धाम ---

III

जेहड़ा ध्यान ला करदा अरदास जी
ओहदी पल विच पूरी होदी आस जी
कि सगंता दे कर्म भरो

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
◊	◊	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊

मेरे राम जी दा रूप निराला
कि भागां वाला दर्शं करे

कृपाधाम ---

IV

सारे सेवकां दे भरदा भंडार जी
मुहों मंगियां मुरादां देवें वाला जी
कि संगतां जावे वारे ही वार
राम जी दा रूप निराला
कि भागां वाला दर्शं करे

कृपा धाम ---

कृपाधाम दीयां महिमा बतारयां
दयां की की रहमतां बखारियां
कि संगतां दा ज्ञान बोढ़
राम जी दा रूप निराला
कि भागां वाला दर्श करे

राम श्रीराम राम

श्रीराम 1.3.2000 7.20 P.M

"श्रीराम" 150

(समता दृष्टि)

बड़ी आवश्यक है

भजन

कोई बोले राम कोई अल्लाह बोले
सब मालिक के नाम, कोई कुछ भी बोले

II

सारी उस की झूठी माया, उस का भेद किसे नही पाया
एक ही जैसी सब की काया, अल्लाह है रूप बनाया
बड़ी अजीब है उस की लीला, उस के बिना हिले न तीला
है चर्चा सरेआम, कोई कुछ भी बोले

कोई बोले राम

III

मन्दिर मस्जिद और गुरुद्वारे, उस के ही हैं डेरे सारे
जो कोई इन में फर्क विचारे, उस की नाव न लगे किनारे
राम भी वही, रहीम भी वही, वाहेगुरु कृष्णा करीम वही

हरि ॐ सतनाम, कोई कहदे जी [illegible]
कोई बोले राम ---

IV

मुझ में राम, तुझ में राम, सब में राम समाया।
सब से कर लो प्यार, जगत में कोई नहीं पराया।
किस पागल ने फिर यह हमको, लड़ना रोज़ सिखाया।
इन पागलों का राम जी करेंगे, सफल सारा सफाया।

राम जी राम राम

श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर पूरी गोपाल।"

पजांबी भजन

करवा दे रब्बा, सन्ता दे नाल साडा
मेल वे
" " " " " " " "

II

सारियां संगता दर्शन नू चलियां
छुट न जावे साडी रेल वे
करवा दे - -

III

खाणा ते पीणा भुल जया साहनू
रोटी न जावे साथों वेल वे
करवा दे - -

IV

जान ते साडी ओहनां ते आई
लोकां ते समझया खेल वे
करवा दे रब्बा

I

विषयां विकारां विच उमर गुजारी
दीवें च मुक गया तेल वे
करवादे ---

करवा दे रचना रामजी दे नाल साढा
मेल वे

रामजी राम राम

श्रीराम
23 3. 2000

SEP 2000

S	◊	10	24
M	◊	11	25
T	◊	12	26
W	◊	13	27
T	◊	14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	◊
M	4	18	◊
T	5	19	◊
W	6	20	◊
T	7	21	◊
F	8	22	◊
S	9	23	◊

पजांबीभजन

छोटा जेहा कम अज तेरे जिम्मे लाणा
अपना है राम फिर कानू शरमाणा ए

I

पहला कम राम मेरे हृदय विच वसजा
हर पासेआवे मैनु नजर तू हसदा

II

दुसरा कम, मैनू परवाह नही मोहा दी
मैनू चाहीदिए केवल तेरे नाल दोस्ती
हर वेले मैनू अपणे कोल बिठाना ए

III

तीसरा कम, जग जंजाल तो बचा लै
भक्तो दी टोली विच नाम मेरा ला लै

IV

चौथा कम मन विचों विषया नू निकाल दे
नाम दी ज्योति मेरे हृदय विच बाल दे
बहुता नहीओ औखा, तूं काहनू रखाना ए
दोहा जेहा - -

V

पंजवां कम श्याम रह तों सब तो ही सौखा ए
अन्त वेले होवें तूं सामने खलोता ए
बांह पकड़ धाम अपने सीधा ई लै जाणा ए
दोहा जेहा —

VI

सुख चैन शान्ति दा घर विच राज होवे
गीता गुरबाणी रामायण दी आवाज़ होवे
मेरा ते राम तूं ही जीवन बनाना ए
दोहा जेहा - -

VII

सब तों आखीर विच रहे मंग मंगदी
मैनू ते देवीं अपने भक्तां दी संगती
किसे वेले वी न मैनू दिल तों भुलाना ए

किसी भी वस्तु से नहीं हो सकती। इस अवस्था में सुख ही सुख है। ज्ञान ही ज्ञान है न जाता पाता है न धूप छाँव है। सदा एक रस है।

साधक एक उड़ती पतंग के समान है जिस की डोर सतगुरु के हाथ में है। यह गगन में घूम कर सब कुछ जानना चाहता है। परन्तु सतगुरु देखते हैं। कि शिष्य कहीं अटक न जाये कहीं भटक न जाये। वह तुरन्त उसे खींच कर अपने पास बुला लेते हैं। सतगुरु समय समय पर अपने शिष्य की परीक्षा भी लेते हैं

यह सब अनुभव शिष्य को सूक्ष्म शरीर में जाने पर होते हैं। कभी २ ध्यान में उसे चमकते तारे के दर्शन होते हैं। जिस का प्रकाश नीले रंग का होता है यह सूक्ष्म शरीर का वाहन है। जो साधक को

2000 लोक लोकान्तरों की यात्रा में ले जाता है

सफा खाली
छोड़ा गया।

Mobile | Fax | E-mail

Jan
Sat
1

(II PART)

नयी सदी के

आखिरी गीत

रामनिराम राय 9 राम

करहवायुज दैनियाला

रऔर पुरी गायाला

Sun 2

1

शब्द 1

हरि चरण शरण गोबिन्द दुखभजना ॥
दास अपने को नाम देवहु ॥

II हरि चरण--

दृष्टि प्रभु धारहु, कृपा कर तारहु
भुजा गहि कूप, ते काढ लेवहो

III हरि चरण--

काम क्रोध करि, अध माइआ के बन्ध
अनिक दोख तन छाद पूरे
प्रभु बिन आन न राखनहार।
नाम सिमरावहु, शरण सूरे

हरि चरण--

पतित उद्धारण, जीअजत तारण।
वेद उच्चार नहि अत पाइओ।

2

गुरा सुखसागर । ब्रहम रतनागार ।
भगति वछलि । नानक गाइआ
हरि चरणा ----

(भावार्थ)

हमें अपने इष्टदेव के सन्मुख सदा दास भावना से रहना है। सदा अपना विश्वास एक ही रखना है नहीं है। नाम, अपने प्रभु से सदा नाम की ही याचना करनी है मन में सदा विश्वास रखना है कि संसार के सारे दुख केवल नाम से ही दूर हो सकते हैं। इसलिए ऐसे नित्य प्रति प्रार्थना करनी है।

हे प्रभो, मैं दीन का दास आप की शरण में हूं, आप का नाम दुखभंजन है

बस आप हर समय आप अपनी याद स्वयं दिलाते रहें।

आप अपनी कृपादृष्टि सदा मुझ दीन दास पर रखें और ऐसी कृपा करो कि, इस असार संसार मे से मुझे अपना हाथ दे कर उभार लो, अर्थात इस संसार की माया का मुझ पर प्रभाव न होने दे।

मैं तो इन सब विकारों से परिपूर्ण हूँ। यह जितने माया के बन्धन है, काम क्रोध लोभ मोह अहंकार आदि सब मुझे खूब तंग करते रहते है, परन्तु मुझे विश्वास है कि इन से केवल आप ही मेरी रक्षा कर सकते है। मुझे अपना नाम जपवाते रहिये। जिस से मेरा मन इन के वश मे न हो जाये

4

आप ही केवल मेरे जैसे पतितों का उद्धार कर सकते हैं, केवल आप ही मेरे जैसे तुच्छ जीव को, इन विकारों से बचा सकते हैं क्योंकि आप का नाम भक्तवत्सल है, आप का अन्त तो वेद पुराणों ने भी गा गा कर अन्त में न इति इति लिख दिया।

इसलिए मैं जितना भी, आप का ध्यान करूँ भजन करू थोड़ा। आप कृपा करें कि, मेरा ज्यादा से ज्यादा ध्यान आप मे ही रहे

" हर समय तुम्हारा चिन्तन हो
हर कर्म तुम्हारी पूजा हो। "

रामजीरामराम "
श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर परी गोपाल।"

"श्रीराम"

(5)

मडद 2

हरि धारहु, हरि धारहु किरपा
कर किरपा, लेहो उबोर राम
हम पापी, हम पापी, निर्गुणा
दीन तुम्हारे तुम्हारे राम

II

हम पापी निर्गुणा, दीन तुम्हारे 2
हरि दइआल सरणाइआ
तूं दुखभंजन सरन सुख दाता
हम पाथर तरे तराइआ
हरि धारहु.

III

सतगुरु भेट राम रस पाइआ
जननानक नाम उधारे राम
हरि धारहु - - -

(6)

भावार्थ

इस संसार रूपी सागर से उभरने के लिए श्री रामजी की कृपा की बहुत ही जरूरत है और हमें सदा विनती करनी है कि हे प्रभो! आप सदा अपनी पूरी कृपा धार कर रखना अर्थात हमारी पूरी निगरानी रखना हमारा मन जन्म जन्मान्तरों से, इसी माया के चक्कर में ही रहा है अभी भी यह बीच २ में कभी विकारों में आ जाता है।

हम पापी हैं, हमारे में वह गुण नहीं है जिन से हम आप को प्रसन्न कर सकें।

जप तप संयम, शम दम तितिक्षा उपरामता, प्रत्याहार यह गुण नहीं है

हम अति दीन हैं परन्तु हैं आपके।

(7)

ईश्वर अंश जीव अविनाशी (रामायण)
ममैवांशो जीव लोके "(गीता)
इस लिए फिर से प्रार्थना करते हैं, चाहे हम
कितने भी पापी दीन हीन हैं, परन्तु अब
आप की शरण में आ गये हैं आपका विरद
सुन कर ?
"शरण आवे तिस कण्ठ लावे"
एह विरद स्वामी सन्दा (बाणी)

जो सभीत आवा शरणाई
राखहु ताहि प्राण की नाई (रामायण)
आता शरण मेरी वही
जाता सहज में पार है (गीता)

आपका नाम दुख दूर करने वाला है, सर्व प्रकार के सुखों को देने वाला है
आप हम जैसे पत्थरों को भी तार सकते हो, इसी आशा से आप की शरण आये हैं
आपने अति कृपा की, हमें सतगुरु से मिला दिया, उन्होंने हमें नाम की महिमा बता बता कर, नाम में रस दिया, इस प्रकार से नाम जप जाप कर हमारा उद्धार हो गया।
प्रत्येक कार्य के कारण तो आप ही हो

श्रीराम

राम जी राम राम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पुरी गोपाला।"

शब्द 3

हमरा ठाकुर सभ ते ऊचा 2
रैणा दिनस तिस गाऊ रे 2
गुरु परसादि मेरे मन वसिया
जो चाहो सो पाऊ रे 2

हमरा ठाकुर - -

II

खिन मे थाप उथापन हारा
तिस ते तुम्हहि डराऊ रे
नाम रंग रह मन तृपताना
बाहरि न कतहू धावउ रे

हमरा - -

III

जब देखउ प्रभु अपना स्वामी
अवरहि चित न पावउ रे
नानक दास प्रभु आप पहिराइआ

प्रभु भज मेर जिवावऊ रे
हमरा हजूर --

(भावार्थ)

हमें सदा मन में यह भाव स्थिर कर के रखना है, कि हमारे भगवान्, हमारे इष्टदेव हमारे सतगुरु, संसार में सब से बड़े हैं अर्थात समर्थ हैं, अन्तरयामी हैं, वह सब कुछ कर सकते हैं उन की कृपा क्या नहीं कर सकती

मृतक को जिवालन हार
भूखे को देवता आधार "

परन्तु हमने क्या करना है? हमने यही कृपा मांगनी है कि निरन्तर हमें अपने प्रभु का ही ध्यान रहे, हमारे मन में सदा उन्ही की ही याद हो, यह केवल राम जी की

(11)

कृपा से ही हो सकता है अगर एक बार पूरी कृपा हो जाये तो जो हम चाहे वह सभी प्राप्त कर सकते हैं।

पूर्ण प्रभु की माया भी बड़ी दुस्तर है
मम माया दुरत्यया (गीता)

दया में वह हमें, माया में फसा भी देते हैं और हम कई प्रकार के दोषों से भरपूर भी हो जाते हैं, इस लिए हर साधक अपने प्यारे राम जी से डरना भी चाहिए उन्हे सदा हाजिर नाजिर समझना, मन को उन्ही के ध्यान मे लगाना है।

मन को समझाते रहना है ऐ मूर्ख मन, अगर तू इस मनुष्य शरीर में ध्यान करता रहेगा, तो तेरी चंचलता ठीक

हो जायेगी, निश्चलता एकाग्रता से ही
भक्ति पूर्ण हो सकती है।

अपने चित्त में केवल अपने स्वामी
पूर्ण परमेश्वर को ही बसा कर रखने की
कृपा याचना करते रहना है। संसार की
दूसरी चीज़ों को अन्दर नहीं बसने देना।

"मेरे तो केवल राम जी, राम जी
दूसरो न कोई"

ऐसा भाव अगर बना रहे तो शोक सारे
भ्रम भय दोष अपने आप ही सब दूर हो
जाते हैं। फिर तो आनन्द ही आनन्द है।

रामजीरामराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाल। श्रीराम
तेरी ओर पूर्ण गोपाल।"

(13)

श्रीराम

गुरु पूर्णिमा 2000

शब्द 4

मोरे आये हैं, आये हैं, हरि आज मोरे आए हैं
पावन पवित्र मित्र आज मोरे आये हैं 2
आये हैं आये हैं 2

II

सुपन चरित्र चित्र नानक नैन निरखा
पावन पवित्र मित्र आज मोरे आये हैं
आये हैं 2

III

परम दयाल लाल लोचन विशाल मुख
वचन रसाल मधु मधुर टपाये हैं
आये हैं आये हैं

IV

सोभत सिंहासन विलासन है अंक मोल
प्रेम रस विलस हैं सहज समाये हैं

आये है, आये है
चात्रक शब्द सुन अखियां उधर गई
गई जल मीन जाति। बिरह जगाये है
आये है - - -

(भावार्थ)

जब हम ध्यान में बैठते हैं, तो कई प्रकार के अनुभव होते हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि हमारे अन्दर बहुत प्रकाश हो गया है उस में सतगुरु ने अपना रूप दिखाया है। बहुत सुन्दर नारायण रूप में प्रभु प्रकट हो गये हैं। वह बड़े ही पवित्र और उज्जवल हैं।

ऐसे लगता है कि हम बड़ा सुन्दर सपना जैसा देख रहे हैं

(15)

वड़ा विचित्र सा दृश्य नजारा लगता है क्योंकि उस मे आलौकिकता होती है

वह बड़े ही दयाल लगते है और बड़े सुन्दर नेत्र है उन के, उन की वाणी भी अति मीठी है मानो हम वह मधु रस जैसी मिठास देते है यह सब अवर्णनीय है।

वह अपने सिंहासन पर शोभाय-मान हो रहे है। उन का मस्तक मानो तिलक से शोभायमान हो रहा है। प्रेम ही प्रेम उन के नयनो मे, उन की वाणी मे सहजभाव से मानो वह प्रेम मूर्ति है।

ऐसे उन की वाणी सुन कर मेरे मे भी उन का प्रेम प्राप्त हो गया।

(16)

बस फिर तो मेरा मन यही करने लगा कि यह शीशा मेरे से एक पल भी दूर न हो। मेरी अवस्था ऐसी हो गई। जैसे मछली जल के बिना नहीं रह सकती। मेरा मन यही करने लगा कि यह कहीं मेरे से अलग न हो जायें उन के प्रति मेरा विरह जागृत हो गया।

यह विरह अवस्था तो किसी भाग्य शाली को प्राप्त होती है। इस के लिए कृपा मांगनी चाहिए।

राधास्वामी करकृपा प्रभु दीनदयाला। श्रीरंग
तेरी ओर चुरी गोपाला।

Feb 12 11 P.M

श्रीराम   शब्द ५ (17)

दरसन देखत दोख नसै
कबहुं न होवह द्रिष्टि अगोचर
जीअ के संग संग साथै
दरसन देखत

II

प्रीतम प्राण-आधार स्वामी
पूर रहे प्रभु अन्तरयामी
क्या गुण तेरे सार सम्हाली
सास सास प्रभु तुम्हहि चितारी
दरसन देखत

III

कृपानिधि प्रभु दीनदयाला
जीअ जंत की करहु प्रतिपाला
आठ पहर तेरा नाम जन जापे
नानक प्रीति लाई प्रभु आपे

"श्रीराम"
(प्रार्थना)

अपने प्यारे सतगुरु जी के, अपने इष्ट देव के दर्शन करने मात्र से, सब रोग, दुख भाग जाते हैं। इस लिए हमें सदा यही प्रार्थना करनी चाहिए कि भगवान सदा हमारे नयनों में अपना रूप दिखाते रहें

"बसहो मेरे नयनन मे गोपाल"

और अन्तर मे भी आप ही दिखते रहें।

"आखें बन्द करु या खोलु
देखु दर्शन तेरा राम"

ऐसी कृपा मांगो, कि सब से प्रिय हमें केवल आप ही लगे, क्योंकि रामजी तो मेरे प्राणों के आधार है। और सब कुछ जानते हैं

2000 हम अपने प्रभु के गुण बखान नही कर सकते

(19)

क्योंकि वहां तो गुण ही गुण है, अवगुण एक भी नहीं, जैसा कि श्री कृष्ण स्वयं गीता में कहते हैं कि जो प्राणी सर्व गुण सम्पन्न है वह मेरा ही रूप है, परन्तु इस मायावी संसार में, करोड़ो में कोई एक है जो ऐसा हो। नहीं तो ऐसा कहा जाता है

To err is human
To forgive Divine

"कोटन मे नानक कउ
नारायण जहे चीत"

बस हम हर श्वास में अपने प्रभु का सिमरण कर के अपने प्रीतम को प्रसन्न कर सकते हैं मेरे भगवान तो सदा कृपा ही करते हैं इसलिए हम केवल उन्ही की कृपा मांगते हैं

फिर वह हमें अपना बना लेते हैं तो सारी जिम्मेदारी उन की हो जाती है वह सब की प्रतिपालना स्वयं करते हैं अपने दास पर कोई भी चिन्ता नहीं आने देते वह अपना प्रेम स्वयं बढ़ाते रहते हैं। अपने दास को अपनी ओर पूर्ण रूपेण प्रेरित कर लेते हैं। ऐसे कई जन्मों तक अपनी प्रीति बढ़ाते रहते हैं

इस लिए हमें सदा उन्हीं की कृपा याचना करनी है, उन्हीं को चाहना है।

श्रीराम

रामजीरामराम,

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूर्ण गोपाला ॥

श्रीराम शब्द 6 (21)

राम राम राम, जप रमत राम सहाई

II

सतन के चरण लागे, काम क्रोध लोभ त्यागे॥
गुरु गोपाल भये कृपाल
लखि अपनी पाई

III राम राम राम ---

विनसे भ्रम मोह अंध
टूटे माया के बन्ध
पूर्ण सर्वत्र ठाकुर
नहीं कोई वैराई

राम राम राम ---

IV

स्वामी सुप्रसन्न भये
जन्म जन्म के दोख गये
सतन के चरण लाग।

(22)

नानक गुरा गाई

राम राम राम ----

भावार्थ

साधक के जीवन लक्ष्य केवल गुरुमन्त्र को जप करना, और हर समय, हर स्थान पर उसे ही अनुभव करना है।

यह केवल संतो के संग से उन की सेवा से प्राप्त हो सकता है, कि हम जीवन का सच्चा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसा करते २ हमारे सारे मोह और भ्रम दूर हो जाते हैं सारे, मैं मेरी के बन्धन टूट जाते हैं सब जगह राम ही राम दिखाई देने लगता है और कोई वैरी नहीं लगता

 इस प्रकार से प्रभु हम पर प्रसन्न हो जाते हैं

(23)

और उन की कृपा से सारे दोष दूर हो जाते हैं, बस फिर हमारा दिल नहीं करता है कि हम हर समय उन्ही के ही गुण गाते रहें। यही तो जीवन की सार्थकता है।

रामजी राम राम

श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।"

श्रीराम

शब्द 7

अमृत पीओ, सदा चिर जीओ
सिमरत अनत अनन्ता।
रंग तमाशा पूरी आसा
कभी न व्यापे चिन्ता। राम

II

पूता माता की आसीस
निमख न बिसरउ
तुम को हरि हर
सदा भजो, भजो जगदीश।

III

जिस सिमरत सब किलविखनासे
पितरी होय उद्धारो राम
सो हर हर तुम सद ही जापे।

(25)

जा का अन्त न पारो राम

IV

सतगुरु तुम को होय दयाला
संत संग तेरी प्रीति राम
कापड़ पति परमेश्वर राखे
भोजन कीरतन नित राम

V

भवंर तुम्हारा एह मन होवहि
हरि चरणा होय कमला राम
नानक दास उन संग लपटाइओ
जिउ बूंदें चात्रिक मउला राम

अमृत पीओ - -

श्रीराम
14 Feb 8:10 AM

रामजीराम राम

श्रीराम (26)

(भावार्थ)

सतगुरु भगवान सदा अपने शिष्य को यही आशीर्वाद देते है कि वह सदा नाम रूपी अमृत पीये, जिस से उस की आयु पूर्ण हो, सदा सिमरण में अपना जीवन व्यतीत करे, उस की सारी आशाए पूरी हो जायें कभी भी किसी प्रकार की चिन्ता न आये जब तक कामना होगी, तब चिंता भी आयेगी परन्तु कोई इच्छा न रहे, यह केवल प्रभु कृपा ही कर सकती है, यह बताते रहते हैं।

सदा सतगुरु, रामजी, जब दया करते है तो वह संसार से प्रीति हटा कर अपनी ओर खेंच लेते है, अपने जीव को, कीर्तन का, नाम का भोजन देते है, साथ उस की लाज भी रखते हैं

(27)

वह सदा यही चाहते है कि उनके चरण नाम रूपी कमल पर भौंरे की तरह मंडराते रहे, चातिक जैसी प्यास नाम के लिए, सतनाम के सिमरन के लिए प्रदान करते है। जिससे उन के जीवों का जीवन सफल हो जाये

श्रीराम

रामजी राम राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला,
तेरी ओर दूरों गोपाला।।

14 Feb. 10.20 P.M

(28)

श्रीराग

शब्द 8

जप मन मेरे गोविन्द की बाणी
साधू जन राम रसन वाखाणी

II

जिस सिमरत दुख सब जाय
नाम रतन वसे मन आय

III

एकस बिन नाही दूजा कोय
जाकी दृष्टि सदा सुख होय

IV

साजन मीत सखा कर एक
हरि हरि आखर मन में लेख

V

रव रहिया सर्वत स्वामी
गुण गावे नानक अन्तरयामी

श्रीराम (29)

अपने मन को हम आप ही समझा सकते हैं। जैसा कि श्री कबीर जी कहते हैं

"नर आप ही है शत्रु अपना,
आप ही है मित्र भी"

इसलिए हमें अपने मन को सीधे मार्ग पर लाना है। ए मेरे भोले मन! तू निरन्तर गोविन्द का नाम जप, उन्हीं की कृपा मांग, जैसा कि सन्त जन सदैव बखान करते रहते हैं।

हरि सिमरन करने से संसार के सारे दुखों रोगों का नाश हो जाता है, और अन्तर में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है।

संसार मे एक परमात्मा के बिना दूसरा सब असत्य है, उन्हीं की कृपा से हम सदा सुखी रह सकते हैं। एक अपने राम जी को ही अपना पति, साथी, सब कुछ जानो।

Sai 30

और सदा मन से उन्हीं का सिमरन करते रहें।
जब हमारा सिमरन निरन्तर चलता है तो
यह अवस्था आ जाती है कि उसी की झलक
सर्वत्र ही अनुभव होने लग जाती है

जड़ चेतन जग जीव जत
सकल राममय जानि
वंदउ सब के पद कमल
सदा जोरि जुग पानि (रामायण)

राम नारायण श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पुरी गोपाला।

2000

श्रीराम

शब्द 9

सुरिा सुरिा नाम तुम्हरा। प्रीतम

प्रभु पेरवराा का चाऊ 2

दइआ करो किरप अपने को।

इहै मनोरथ सुआओ 2

सुरा---

II

तन धन तेरा तूं प्रभु मेरा

हमरे वस किछु नाही 2

जिउ जिउ रारवंहि, तिउ 2 रहराा

तेरा दिआ रवाई 2

सुरा---

32

न्म के किलविख काटे

रि जन धूरि 2

भाय भगति भरम भय नासै

जन नानक सदा हजूर 2

सुरा ----

भावार्थ

जब हम अपने प्रभु के नाम की महिमा
बार बार सुनते हैं तो हमारे मन में उन के
दर्शन की लालसा भी उत्पन्न होने लगती है
जैसा कि गीता में श्री कृष्णा जी कहते हैं
कि जब मेरा भगत मेरी ही चर्चा करता है
मेरा कीर्तन करता है तो फिर उसे मैं बुद्धि

बुद्धियोग प्रदान कर देता हूं, फिर वह मेरा दर्शन चाहता है, वही भाव यह प्रकट किया है।

फिर जीव अपने आप को भगवान का छोटा सा किरण मानता है और कृपा मांगता है। तन मन धन सब अर्पण कर देता है। अपने आप को पूर्ण समर्पित कर देता है।

इस प्रकार से जन्म २ के पाप उसके नाश हो जाते है उसे संतो की चरण रज मिलने लगती है। इस से उस के मन में भाव और भक्ति उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार उसके भ्रम भय सारे समाप्त हो जाते है। अपने रामजी को साक्षात देखता है प्रसन्न रहता है

Tue
Thu

(34)

श्रीराम

(A)
1 शब्द (अपने सतगुरु के प्रति)
सच्ची निष्ठा सच्चा प्रेम)

श्री गुरु देखणा जाई (थारिआ?
श्री गुरु देखणा जाई 2
सोहणा देखणा जाई
मन मोहणा देखणा जाई
श्री गुरु देखणा --

II
लाख भोगी सीह नरेस, श्री " " जाई
समुद्र सागर होवे अति खार,
गुरु सिख लघं गुरु पहि जाई

III
जिउ प्राणी, जल बिन है मरता,
2000 तिउ सिख, गुरु बिन मर जाई

(35)

जिउ धरती सोभ करे जल बरसै
तिउ सिख गुरु मिल बिगसाई
श्री गुरु दावरा --

IV

सेवक को होय सेवक वरता
कर कर विनय बोलाई
नानक की वेनती हर पहि
गुरु मिल गुरु सिख पाहि।

राम जी राम राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरन गोपाला।
श्री राम

Feb 15 - 7.10 P.M

"श्रीराम"

भावार्थ

जिन को अपने सतगुरु से सच्चा प्रेम हो जाता है, वह फिर उन के सतसंग बिना, उन के दर्शन के बिना नहीं रह सकते।

चाहे कितनी भी विपरीत अवस्था हो, शिष्य का सच्चा प्रेम, सतगुरु के द्वार पर पहुंचा ही देता, कितनी बरसात हो रही हो, आंधी चल रही हो, शिष्य पहुंच ही जाता है क्योंकि उधर से सतगुरु आप उसे अपनी ओर खींच रहे होते हैं।

जैसे प्यासा पानी के बिना तड़पता है वैसी तड़प राम जी अपने शिष्य मे पैदा कर देते हैं। जैसे पृथ्वी पर वर्षा के बाद हरियाली आ जाती है। ऐसे ही शिष्य जब

(37)

सतगुरु के पास पहुंचता है तो कमल की तरह खिल जाता है। उसे अन्दर बाहर दोनों का आनन्द प्राप्त होता है।

सेवक अपने सतगुरु के आगे प्रार्थना करता है कि कभी भी उस का विछोड़ा न हो। वह परमात्मा के आगे भी यही प्रार्थना करता है कि मुझे सतगुरु से जरूर मिलाओ।

उस का भावार्थ यह है कि संसार की कितनी भी कठिनाइयां आ जाये, उसे इस प्रकार की लगन सतगुरु देते हैं कि वह, संतसंग से अपने राम जी के पास पहुंच ही जाता है

रामजी राम राम कर कृपा प्रभु दीनदयाला श्री राम
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

14th Feb 10. P.M 2000

Feb
Tue

38

शब्द 10

नाना खिव देखिआ संसार 2
रखिआ करहु गुसाई मेरे, मै नाम तेरा आधार 2

II

जो तूँ साहब तां भउ केहा
हउ तुध बिन किस सालाही राम
एक तूँ तां सब किछ है
मैं तुध बिन दूजा नाही राम

III

जाणहि बृथा सभा मन की
होर किस पै आख सुणाईए राम
बिन नावै सब जग बउराना
नाम मिले सुख पाईए राम

IV

क्या कहिये किस आख सुणाईए

2000

(39)

जो कहराना जो प्रभु जी पास राम
सब किछ कीता तेरा वरते
सदा सदा तेरी आस है राम

V

जे देह वडिआई ता तेरी वडिआई
इत उत तुमहि ध्यांऊ राम
नानक के प्रभु सदा सुखदाते
मैं ताणा तेरा इक नाऊ राम

राम जी राम राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाल॥ श्रीराम
तेरी ओट पूरण गोपाल।

14 FEB 10.15 PM

भविष्य

संसार में रह कर अगर सतगुरु नहीं मिलते या ज्ञान जाग्रत नहीं होता, तो यह संसार डावांडोल हो जाता है। हमारी आसक्ति ही हमें तंग करती है इसलिए हमें अपने इष्ट देव से प्रार्थना करनी है कृपा मांगनी है कि वह अपनी कृपा से हमें इन विकारों से बचा कर रखें।

फिर विश्वास हो जाता है कि अगर हमारे सिर पर अपने सतगुरु का हाथ है तो हमें कोई भी भय नहीं। क्योंकि हम सारे संसार को तुच्छ समझ कर अपने प्रभु की ही सराहना करने लगते हैं। हमें पूरा विश्वास हो जाता है कि अगर राम जी की कृपा है तो सब की कृपा है फिर हमें दूसरों की जरूरत नहीं रहती क्योंकि

(41)

"जां पर कृपा राम की होई
तां पर कृपा करे सब कोई"

फिर हम अपना सारा ज्ञान केवल अपने
प्रभु को ही सुनाते हैं क्योंकि उन्हीं का प्रेम
निष्काम है। शेष सब संसारी प्रेम स्वार्थ के हैं
फिर हमें समझ आ जाती है कि नाम के बिना
सारा संसार पागलों की तरह चल रहा है
जो नाम जपते हैं वही पूरी तरह सुखी रहते हैं
सब तरह से अपने सतगुरु को
समर्पित हो जाते हैं, उन्हीं की आशा करते हैं
अगर उन्हें कोई बड़ाई देता है तो वह अपने
प्रभु की बड़ाई समझते हैं, उन्हें केवल नाम
का जोर होता है। ऐसे वह सदा मस्त रहते हैं

Ramniranjan

श्रीराम

14th Feb 2000
118.37

Feb Sat 26

(42)

शब्द ॥

बिसर गई सब ताति पराई
जब ते साध संगति मोहि पाई

II

ना को बैरी नाही बेगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई

III

जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ
एह सुमति साधू ते पाई

IV

सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै
पेखि पेखि नानक बिगसाई

रामकली रामरतन श्री राग

कर कृपा प्रभ दीनदयाल
तेरी ओट पूरी गोपाल

Sun 27

2000

श्रीराम

जैसा कि श्रीकृष्ण जी कहते हैं
"निर्वाण मोह। जित संग दोषा"
जिन्हों ने सब दोष जीत लिया है, वह सदा ही निर्वाण है। यह भी यही समझाया गया है, कि जिन्हे पूर्ण सन्तों का संग प्राप्त हो जाता है उन में समता योग आ जाता है, उन के लिए सब अपने हो जाते हैं, उन्हे कोई भी वैरी नही लगता सब में वह अपने प्रभु की झाकी देखते हैं।

पूर्ण संत पहले गुरु मन्त्र देते हैं, उसे जपने की विधि बताते हैं

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

कि पूर्ण गोपाला, पूर्ण प्रभु की कृपा से क्या नही हो सकता?

गुरुमन्त्र जाप करने से। कृपा याचना करने से बुद्धि बदल जाती है। जो भी वातावरण हमारी जिन्दगी मे आता है। हमें उस मे भलाई ही प्रतीत होने लगती है। सब मे हमें राम ही राम दिखता है इससे हमारा जीवन आनन्दमय हो जाता है।

अगर हम किसी को देख कर प्रसन्न हो जाते हैं तो यह प्रसन्नता हमें मुफ्त मे ही मिल गई। अगर हमारे मन मे दूसरे के प्रति कटुता आ जाती है तो बिना मतलब के हम दुखी रहते हैं इस लिए कर कृपा की मंत्र जाप करते हुए यह भाव रखना है कि हमारे मन मे किसी के प्रति भी द्वेष न आये।

श्रीराम

रामजीरामराम कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर दृष्टि गोपाला।

Feb 15 7.30 AM

2000

(45)

शब्द 12

हउ वारि वारि अपने गुरु को जासा 2
मैं प्रभु मिलणा प्रेम मन आसा 2
गुरु पूरा मिलावे, मेरा प्रीतम
हउ वारि 2 अपने गुरु को जासा

II

सेज एक, एको प्रभु ठाकुर
गुरमुख हरि, रावे सुखसागर
गुरु पूरा ----

III

मैं अवगुण भरपूर शरीरे
हउ किउ कर मिला अपने प्रीतम पूरे
गुरु पूरा - - -

IV

जिन गुणवन्ती मेरा प्रीतम पाइआ
से मैं गुण नाही, हउ किउकर मिला मेरी माइआ

(46)

V

हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे
नानक गरीब राखहु हरि मेरे

भावार्थ

इस संसार में सबसे बड़े भाग्य उन के हैं, जिस के मन में प्रभु मिलने की चाह उत्पन्न हो जाये, फिर प्रभु कृपा करते हैं। उसे पूर्ण गुरु से भेंट करवा देते हैं।

पूर्ण गुरु जीव को समझाते हैं कि हमारे मन बुद्धि रूपी सेज के ऊपर केवल। अपने प्रभु को स्थापित करना है। शेष छोटी २ बातों का छोटे २ सम्बन्धों का ज्यादा ध्यान नहीं करना। उन सब को प्रभु को समर्पण कर देना है।

अपने राम जी के सन्मुख हमेशा अपने अवगुणों के लिए क्षमा याचना करते रहना है।

जो, जो ऊंची आत्मायें हैं, जो सदा सेवा सिमरण सतसंग, धारणा ध्यान समाधि, शम दम समाधान उपराम तितिक्षा, में रमण करती हैं। उन जैसा बनने के लिए मन में चाव रखती हैं।

और सदा अपने प्रभु से प्रार्थना करती हैं कि मैंने कितने ही कर्म कांड कर के देख हैं कुछ भी प्राप्ति नहीं है, बस अब आप मेरे हो जाओ, मैं सदा आप को हर समय हाजिर नाजिर समझूं और हर कर्म आप के लिए ही करूं, ऐसी बुद्धि बना दो। फिर समझो कि हम प्रभु से मिल गये।

राम जी राम राम श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

Feb/16 Wed. 12·15 P.M 2000

Mar
Sat
4

शब्द 12 A (48)

अउखी घड़ी न देखण दई,
अपना बिरद्ध समाले
हाथ दे राखे अपने कउ
सास सास प्रतिपाले
II
प्रभु सिंउ लाग रहयो मेरा चीत
आदि अंत प्रभु सदा सहाई
धन हमारा मीत
III
मन बिलास भये साहिब के
अचरज देख वडाई
हरि सिमर सिमर आनन्द कर नानक
प्रभु पूरन पैज राखई

Sun 5

राधास्वामी राधेराम
श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओट पूर्ण गोपाल।

2000

श्रीराम

(49)

शब्द 13

सभै गलां विसरन, इको विसर न जायो 3

I

धन्धा सब जलाय के, गुरु नाम दिआ सच सुआओ
आसा सभै लाहे के, इको आस कमाओ

II

जिनि सतगुरु सेविआ, तिन अगो मिलिआ थाउ
मन मेरे कर्ते नू सालाही 2

III

सभै छड सयाणपा गुरु की पैरी पाही

IV

दुख भुख न व्यापहि जे सुख दाता मन होय
कित ही कम न छीजिए, जा हुक्म सच्चा सोय

V

जिस तूँ राखै हथ दे, तिस मार न सकै कोय
सुखदाता गुरु सेविए, सभ अवगुण कढै धोय

VI

सेवा मों सेवक लाया अपनी सेव
साधू संग मुसकते, तुठे पावो देव

VII

सब किछ वसगत साहिब, आपे करण करेव
सतगुर के बलिहारणे, मनसा सभे पूरेव

VIII

इको दिसै सजणो, इको भाई मीत
इकस दी सामग्री, इकस दी है रीत
इकस सिउ मन मानिआ, तो निहचल होआ चीत
सच खाणा सच पैनणा, टेक नानक सच कीत

(51)

भावार्थ

जितने भी हम मायावी जीव है, चुप नही रह सकते। परन्तु सतगुरु देव हमें चेतावनी देते है कि हमें ज्यादा बातें नही करनी। एक अपने प्रभु को याद रखना है शेष सब भूल जाना है भूत भविष्य को भूल कर वर्तमान मे रहना है।

संसार के धन्धे भी कभी खतम नही होने वाले, सब जब सतगुरु नाम दे देता है, तो मनुष्य सारे संसारिक कार्य अपने आप ही होने लगते है बार बार हमें जगाते भी रहते है हे जीव! तू सारी आशाएं छोड़ कर एक आशा भगवान की रखो जो निष्काम भाव से ठाकुर की सेवा करते है उन के दोनो लोक सवर जाते है, क्योंकि वह हर समय, अपने मन को समझाते रहते है। ए मन तू केवल नाम सिमरण कर।

2000

अपनी सारी चतुराइयां छोड़ दे और प्रभु की शरण में हो जा। अगर तुमने प्रभु को अपना लिया तो संसार की सारी तृष्णाएं खत्म हो जायेगी। फिर तो सदा के लिए सुखी हो जायेगा। अगर तेरे मन में सतनाम का निवास है तो सारे कार्य तेरे स्वयं ही पूरे हो जायेंगे। भाव नहीं तो प्रभाव नहीं।

जिस पर आप की कृपा है उस पर सब की कृपा हो जायेगी। ऐसा दृढ़ विश्वास रखो। उन प्रभु की कृपा से सारे अवगुण भी दूर हो जाते हैं। सब कुछ तो मेरे प्रभु के आधीन है

इन्हीं ही सब कुछ है, वह सब करने कराने वाले हैं। अगर हमारा प्रभु से मन मान गया तो तभी हमारा मन स्थिर हो सकता है। बस सतनाम

2000 ही आधार हो गया तो बेड़ा पार हो गया।

(53)

श्रीराम

शब्द 14

अजावो घड़ी न देखण दई
अपना विरद्ध सभाले
हाथ देइ राखै अपनो कउ
सास सास प्रतिपाले

II

प्रभु सिउ लाग रहयो मेरा चीत।
आदि अंत प्रभु सदा सहाई
धन हमारा मीत

III

मन बिलास भये साहब के
अचरज देख वडाई
हरि सिमर सिमर आनन्द कर नानक
पूरी पैज रखाई

शब्द 14

हमें सदा अपने राम जी से यही प्रार्थना करनी है। हे प्रभो! हम हमेशा सुख में आप का ध्यान करें क्योंकि दुख में भजन करना तो हम दुख का भजन कर रहे हैं भगवान का नहीं।

इसलिए गुरुसाहब फरमाते है कि इन जीवों पर कोई विपत्ति न आने पाये, आप अपना कृपा भरा हाथ सदा इन पर रखना, यह सब मायावी जीव है। इन की माया से हर श्वास में रक्षा करना, जो भी आप की शरण में रहते है उन को तो अपने बच्चे जैसे रक्षा करते हो।

ऐसे हमारा विश्वास प्रभु चरणों में बढ़ जाता है फिर हमें ज्ञान हो जाता है जिसने आदि में रक्षा की (जन्म से पहले) मृत्यु में भी वह आप भगवान काल के रूप में आयेंगे, ऐसे है मेरे राम जी।

(5157)

ऐसा भाव हमारा देख कर रामजी भी प्रसन्न हो जाते है कि, मैने अपने जीव को माया मे डाला है परन्तु यह भी फिर भी मुझे ही चाह रहा है। फिर और कृपा करते है धीरे 2 उस का अज्ञान सारा मिटा कर अपना रूप बना लेते है।

इस लिए, हमें सिमरन भजन कभी नही छोड़ना चाहिए अपने गुरू प्रभु की कृपा ही मागनी चाहिए।

राम जी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला॥
तेरी ओट पूरी गोपाल

Feb 17. Thru. 3.

रामराम

शब्द 15

अब हम चली ठाकुर पै हार 2
जब हम शरणा तुम्हारी आई
राख प्रभु भावै मार

II

लोकन की चतुराई उपमा
ते बैसंतर जार
कोई भला कहे भावै बुरा कहे
हम तन दीनो है ढार

III

जो आवत शरणा ठाकुर प्रभु तुम्हरी
तिस राखहु किरपा धार
जन नानक शरणा तुम्हारी हार जीओ
राखहु लाज मुरार

2 राम कर कृपा प्रभु दीनदयाला श्रीराम
तेरी ओर पूर्ण गोपाला

व्याख्या शब्द 15

इस संसार में प्रकृति का ऐसा नियम है। जीव संसार में आता है बड़ा होता है फिर वृद्धावस्था में आता है। बुढ़ापे आ कर इन्सान हार जाता है, जब शरीर भी कमजोर हो जाता है, वही संसार डरावना बन जाता है

इस लिए जो गुरुमुख होते हैं, वह पहले ही अपने राम जी की शरण ले लेते हैं और पूर्ण समर्पण कर देते है। फिर उन्हें भगवान भक्तियोग प्रदान करते है, फिर चाहे उन की निन्दा करे या स्तुति करे उन्हें कुछ भी प्रभाव नही पड़ता। क्योंकि दृढ़ विश्वास होता है कि जब हम पूर्ण प्रभु की शरण मे है तो वह अवश्य ही अपना कृपा भरा हाथ अवश्य रखेंगे। इस लिए मैं भी आपकी शरण हूँ

शबद 16

लजा राखवी राम। मेरी लजा राखी राम
जन के पूरन होए काम 2
कलिकाल महा बिखिआ मैं
लजा राखी राम 2

II

सिमर सिमर स्वामी प्रभु अपना।
निकट न आवे जाम 2
मुकति बैकुंठ साध की संगत।
जन पाइओ हरि का धाम 2

III

चरण कमल हरिजन की थाती
कोटि सुख बिस्राम 2
गोबिन्द दामोदर सिमरउ दिन रैण।
नानक सद कुरबाण। 2

शब्द 17

नारायण नारायण नारायण
प्राणी नारायण सुधि ले 2

II

छिन छिन अउध घटै निसिबासुर
वृथा जात है देह
नारायण।----

III

(जवानी) तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ।
बालपन अज्ञान।
(बुढ़ापा) बिरध भइओ अजहू नही समझै
कउन कुमति उरझान।
नारायण।---

IV

(मनुष्य) मानस जन्म दीओ जिह ठाकुर
सो तै किउ बिसराइओ
मुक्त होत नर जा कै सिमरै
निमख न ताको गाइओ नारायण।

(60) Mar Sat 18

माइआ को मद कहा करता है
सो न काहू जाई
नानक कहत चेत चिंतामणि॥
होइ है अन्त सहाई

नारायण॥ ---

श्रीराम

रामजी राम राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर पुरी जो वाल।

Sun|19

2000

शब्द 18

प्रभु मेरा अन्तरयामी जान
कर किरपा पूरन परमेश्वर
निहचल सच शब्द निसान

II प्रभु मेरो

हरि बिन आन न कोई समरथ
तेरी आस तेरा मन तारा।
सर्व घटा के दाते स्वामी
देहि सो पहनरा। खारा। प्रभु मेरो..

III

सुरत मत चतुराई शोभा
रूप रंग धन माया।
सर्व सुख आनन्द, नानक जप
जप राम नाम कल्यारा।
राम जी राम राम श्रीराम

श्रीराम

भावार्थ शब्द 18

सबसे पहले तो ध्यान रखना है कि इस संसार में, केवल प्रभु मेरे अपने हैं। फिर कृपा मांगनी है तो केवल उन्ही को मांगनी है, क्योंकि संसार तो कृपा करता नही. सब सुख चाहते है। हमने कृपा केवल शब्द को मांगनी है कि हमारे अन्दर शब्द चले। मन में पूर्ण विश्वास रहे कि मेरे प्रभु समरथ है उन जैसा संसार मे और कोई भी नही है. इस लिए मुझ तो उन की ही आशा है उन्ही का बल है। वह तो सब के अन्दर की जानने वाले हैं. मुझ खाना पहनना कई जन्मो से देते ही आ रहे हैं, मेरी मति, मेरी सूरत यह शोभा सब उन्ही की दी हुई है इसलिए मेरा सदा यही कर्तव्य है कि मै हर समय

उन्हीं का नाम जपूं, उन्हीं का ध्यान करूं, उन्हीं के मन में दर्शन करूं उन्हीं का रूप सारा जग देखूं। बस इसी में हमारा कल्याण है

अपने मन को इस प्रकार समझाते रहना है

भक्ति का फल अन्त में श्रेष्ठ है संसार का फल शुरू में मीठा है अन्त में विष है।

श्री राम

रामजीशरण

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला॥

श्रीराम शब्द 19

काहे मन तू डोलता, हरिमनसापूर्णा हार है
हरि मनसा पूर्णहार, हरि मनसा पूर्णहार

II

हरि नामा आराध मन, सब किलविख जाये विकार
सतगुरु पुरख दपाय तू, सब दुख बिसारणहार

III

जिन को पूर्बलिखिआ, तिन रंग लगा निरंकार
ओन्ही दइया माया सुआवड़। धन संचया नाम
अपार

IV

अठे पहर इकतेलिवे, मन्नन हुक्म अपार
जननानक मंगो दात इक, देहु दरस मन प्यार

राम जी राम राम श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरो ओर पूर्णा गोपाला।

2000 Feb 19 8 AM

श्रीराम

मन के हारे हार है
मन के जीते जीत

इस लिए अपने मन को सदा सक्षम और सबल बनाना है। उसे केवल हरि नाम की महिमा बतानी है, ध्यान करने की विधि इसे बतानी है Introvert करना है बाहर ज्यादा नहीं देखना। देखा अनदेखा करो, सुना अनसुना करो। माया का स्वाद हमेशा जीव को दुःखी करता है। जीव संसार से रस चाहता है। संसार इसे दे नहीं सकता। फिर यह दुःखी होता है।

जो संसारी रस को धोखा समझ कर हर समय भगवत् प्राप्ति के लिए कृपा मांगते हैं उन्हें यह महारस प्राप्त होता है

फिर उन्हे संसार के यह छोटे छोटे रस, जैसे परिवार के सुख का रस, यह जीहा के रस या मान प्रतिष्ठा के रस, यह रस इतनी महत्ता नही रखते, वह इन सब से ऊपर उठ जाता है तो सदा के लिए सुखी हो जाता है।

इसलिए हमें अपने प्यारे प्रीतम प्रभु से राम जी से दरशन की प्यास ही मांगनी चाहिए। प्यास होगी तो प्रयत्न होगा। प्रयत्न होगे तो सफलता अवश्य मिलेगी यह भी केवल प्रभु कृपा से ही मिल सकती है।

श्रीराम

Sun 26

रामजीरामराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पुरी गोपाला।

शब्द 20

सतं रहत सुनहु मेरे भाई
उहा की महिमा कथन न जाई

II

आठ पहर निकट कर जाने
प्रभु का कीआ मीठा माने

III

एक नाम सतनं आधार
होय रहे सन की पग हार

IV

वरतरा जा के केवल नाम
अनद रूप कीरतन विश्राम

V

मित्र शत्रु जा के एक समाने
प्रभ अपने बिन अवर न जाने।

VI

कोट कोट अघ काटन हारा।
दुख दूर करन, जीअ का दातारा

VII

सूरवीर वचन के बली
(माया) कउला बपी सती छली

VIII

ता का संग वाछें सुर देव
अमोघ दर्श सफल जा की सेव

IX

कर जोड़ नानक करे अरदास
मोहे संत टहल दीजे गुणतास

राम जी राम राम श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

Feb 19 8.15 AM

श्रीराम

हम दैनिक प्रार्थना में अपने राम जी से
क्या मांगते हैं ?

शुभ चिन्तन गोविन्द स्मरण।।
निर्मल साधु संग

निर्मल साधु कौन है जिस में यह चार
गुण हो ?

(1) जो अपने प्रभु को आठ पहर हाजिर
नाजिर समझता है देखता है इस लिए
वह कोई भी गलत काम नहीं करता।

(2) जो अपने प्रभु के हर एक कार्य को
ठीक समझ कर उसे मानता है और
दुखी नहीं होता।

(3) जो नाम उसने अपने सतगुरु से प्राप्त किया है, उसे जपता रहता है, और मन को संसारी विषयों से रोकता रहता है

(4) अपने में बड़ाई नहीं आने देता, सब कुछ अपने सतगुरु राम जी को ही मानता है

(5) उसे कीरतन करने में सुनने में ही आनंद आता है और नाम की बातें सुनने में ही प्रसन्नता होती है।

(6) जिसे मित्र शत्रु दोनों समान लगते हैं शत्रु से वह सीखता है कि यह अपनी कटुता से मुझे प्रभु की ओर अग्रसर कर रहा है।

(71)

जो अपने वचन का पक्का होता है, मन में अच्छी बात जो निश्चय कर ली है उसे प्रभु की कृपा मांग कर पूरी कर के छोड़ता है।

ऐसा संत (व्यक्ति) लोगों के पापों को भी भगवान से माफ करवा देता है लोगों के दुखों को दूर कर देता है जीवात्मा का भोजन दे सकता है

ऐसे संतों की सेवा करने से लाभ होता है, ऐसे संतों का दर्शन तथा सेवा बड़ी मुश्किल से प्राप्त होती है (क्योंकि ऐसे संत अपनी कोई सेवा नही करवाते, वह अपनी कमाई कर के खाते है (दान का अन्न नही खाते)

संत की सेवा नाम ध्याइये
ऐसे संत केवल भगवान का भजन
करना ही, अपनी सेवा समझते हैं।
ऐसे संतो के दर्शन से सब पाप
धुल जाते हैं, वह भगवत स्वरूप है। ऐसा
जान कर सोच समझ कर गुरु धारण
करो

पानी पीयो छान के
गुरु करिए जान के

रामजीराम राम श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर चला गोपाला

Sun 2

राधास्वामी राधास्वामी

श्रीराम

शब्द 21 प्यारे गुरु साहब जी की जय

(यह शब्द गर्भवती स्त्रियों के लिए है) रोज सवेरे, रात को इस का पाठ करना चाहिए इस से मनोकामना पूरी हो जाती है

शब्द 21

सतगुरु साचे दिया भेज
चिरजीवन उपजिआ संजोग
उदरै मांहि आई कीआ निवास
माता के मन बहुत बिगास

II

जमिआ पूत भगत गोबिन्द का
प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का
रहाउ

दसी मासी हुकम बालक जन्म लीआ
मिटिआ सोग महा आनन्द थीआ

III

गुरबाणी सखी आनन्द गावै
साचे साहिब के मन भावै
वधी वेल बहु पीड़ी चाली
धर्मकला हर बंध बहाली

IV

मन चिंदिआ सतगुरु दिवाइआ
भए अचिंत एक लिव लाइआ
जिउ बालक पिता ऊपर करे मान॥
बुलाइआ बोले गुरु के भाणा॥
गुझी छन्नी नाही बात
गुरु नानक तुठा कीन्ही दात

शब्द 22

हऊं देखा दर्शन तेरा
घर आओ साजना 3

हऊ देखां - - -

II

घर आपनड़े खड़ी तकां
मन चाऊ घनेरा राम 3

हऊ देखा - -

III

चाऊ घनेरा सुरा प्रभु मेरा
मै तेरा भरवासा।
दरशन देख भई निहकेवल
जन्म मरण दुख नासा 3

हऊ दे.

सगली जोत जाता तूं सोई
मिलिआ सहज सुभाई
नानक साजन को बलि जाईऐ
सहज मिलै घर आए 2

हउ देखा - :

रामजी राम राम श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला

श्रीराम

शब्द 23

हल्ले यारा हल्ले यारा खुशखबरी 2
बलि बलि जांऊ हऊ बलि बलि जांऊ
नीकी तेरी गिगारी आला तेरा नांऊ
कुजा आमद, कुजा रमती कुजा मेरवी
द्वारिका नगरी रास विगोई

हल्ले यारा - - -

खुब तेरी पगरी मीठे तेरे बोल
द्वारिका नगरी काहे के मगोल
चंदी हजार आलम एकल खाना
हम चिन्ही पातशाह सांवले वरना
असपति गजपति नरह नरिंद
नामे के स्वामी मीर मुकन्द
रामजीराम Feb 24 2.2.P.M श्रीराम

श्रीराम

(भावार्थ)

जब हम अपने प्यारे भगवान जी, राम जी, पर बलिहार जाते हैं तो सब खुशी ही हो जाती है

यह नामदेव जी कह रहे हैं, जब उन्हें किसी मुसलमान फकीर में भगवान श्री कृष्णजी के दर्शन हुए, वह इस प्रकार वर्णन कर रहे हैं।

तेरा नाम भी बड़ा सुन्दर है और तेरा पहरावा भी बड़ा सुन्दर है, आप कहां से आये हो, कहां जा रहे हो? और कहां गये थे? अब तो आप द्वारिकापुरी मे हो, आप तो सांवरे घनश्याम महाराज की तरह दिख रहे हो, हम घोड़ो के मालिक हो, हाथियों के मालिक हो मनुष्यों के भी मालिक हो, मेरे आप स्वामी मोक्ष देने वाले हो। इस प्रकार जब कृपा हो जाती है तो प्रभु कहीं भी प्रकट हो जाते हैं।

रामजीरामराम श्रीराम

शब्द 24

हरि जीओ किरपा करे 2
तॉं नाम ध्याइये जीओ 2
सतिगुरु मिले सुभाइ
सहज गुण गाइए जीओ
हरि जीओ---

II

गुण गाइ विगसै सदा
अनदिन जां आप साचे भावए
अहंकार हउमै तजै माइआ
सहजि नाम समावए
हरि जीओ

III

आप करता करे सोइ
आप देइ ता पाइए
हरि जीओ किरपा करे ता
नाम ध्याइए जीओ

रामजीरामराम
श्रीराम
3.20 P.M.
Feb 24 2000

श्रीराम शब्द 25

मेरे प्रभु प्रीतम प्राण आधारा
हऊ सुण सुण जीवा नाम तुम्हारा
मेरे प्रभु ---

II

तू वडदाता अन्तरयामी
सब में रविआ पूरा प्रभु स्वामी
तेरी शरण सतगुरु मेरे पूरे
मन निरमल होय संता धूरे
मेरे ---

III

चरण कमल हृदय उरधारे
तेरे दरशन कउ जाइ बलिहारे
कर किरपा तेरे गुण गावां
नानक नाम जपत सुख पावां
मेरे प्रभु -

श्रीराम शब्द 26

(मकान की नींव रखने के समय यह शब्द उच्चारण करो)

अविचल नींव धराई सतगुरु
अविचल नींव धराई 2
कबहु डोलत नाही सतगुरु
कबहु डोलत नाही

II

तू मेरे प्राणआधार गोविन्द जीओ
तू मेरे प्राणआधार
साजन मीत सखाई तुम ही
तू मेरो परिवार है गोविन्द
तू मेरो परिवार

III

कर मस्तक धारिओ मेरे माथे

साध संग गुण गाए
तुम्हरी कृपा ते सब फल पाए
रसिक राम नाम धिआए
अविचल नींव धराई--

गुरु नानक जन भए दइआरा
सर्व सुखानिधि पाई राम
सर्व सुखानिध पाई
अविचल नींव - - -

श्रीराम शब्द 27

दरशन मागउ, मागउ दरशन मागउ
देह प्यारे
तुम्हरी सेवा कौन कौन न तारे
दरसन मागउ--

II

जिस नीच को कोई न जानै 2
नाम जपत ओह चहु कुंट मानै
दरसन मागउ--

III

जा के निकट न आवै कोई
सगल सृष्टि वा को चरण मल धोई
दरसन --

IV

जो प्राणी काहू न आवत काम
संत प्रसाद ता को जपिए नाम

साध संग सेवत मन जागे
तब प्रभु नानक मीठे लागे
दरसन मागउ - -

भावार्थ
निष्काम सेवा करने से भक्ति
मिलती है और भक्ति सच्ची हो तो सारे
संसार में मान मिलता है

रामजीराम राम श्रीराम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला

Feb 24 1 P.M

श्रीराम

ध्यान समाधि

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर चुरी गोपाल।

माया से ग्रसित जीव के, जब पुण्य कर्म जाग्रत होते हैं, तो उसे सतगुरु मिलते हैं, सतगुरु की पूरी कृपा से जीव को, गुरुमन्त्र मिलता है, जो इस जीवन में परमानन्द देता है। गुरुमन्त्र के साथ गुरुदेव उसे कुछ पूंजी देते हैं जिस से जीव के कुछ अनुभव खुलते हैं उनसे वह साधना की कृपा द्वारा आगे बढ़ाता है। यह आनन्द उसे ध्यान के तरीों में ही मिल सकता है

ध्यान क्या है ?

ध्यान एक प्रक्रिया है, जिससे साधक गुरुमन्त्र का आश्रय ले कर आसन पर बैठ कर अपने आप को स्थिर करता है। मन को संयमित करता है। प्रारम्भ में यह समय कम होता है फिर रस आने से धीरे २ स्वयं ही बढ़ जाता है।

ध्यान में बैठने के लिए स्थान स्वच्छ, शरीर स्वच्छ हो, घर के एकान्त स्थान पर, अपने इष्टदेव को प्रणाम करके उन का दिया गया मन्त्र दोहरायें जाप करें पहले जीभ द्वारा फिर अन्तरमन द्वारा यह प्रक्रिया निश्चित समय, निश्चित

स्थान पर करनी है।

पहले २ मन इधर उधर भागेगा
थोड़े दिनों में स्थिरता आने लगेगी
जब आसन पर स्थिरता आ जाये
तो नासिका के अग्रभाग पर देखते
हुए मन्त्र का जाप करना है। कुछ
समय बाद, श्वास को आते जाते
देखना है। जब श्वास अन्दर जाये
तो राम" और बाहर आये तो श्री" का
जाप करना है, इस प्रकार धीरे २ मन्त्र
चलेगा और आनन्द भी आने लगेगा
फिर आंखें बन्द कर के नासिका
के ऊपर, दोनों भौहों के मध्य में
अन्तर्दृष्टि टिका कर अपने सतगुरु

इष्टदेव को देखते हुए, शान्त चित्त हो कर आसन पर बैठे रहना है। गुरु मन्त्र का जाप करते रहना है। फिर भी हमारा मन चंचल हो सकता है, घबराना नही। धीरे 2 मन शान्त होने लगेगा। ध्यान में आनन्द आने लगेगा।

ध्यान करते करते, एक अन्तर शान्ति अनुभव होगी, जो संसारिक आनन्द से भिन्न होगी। फिर मन को भी रस आने लगेगा। जीवन में chance आने लगेगा, एकान्त अच्छा लगेगा। सतसंग अच्छा लगेगा।

जब सतगुरु शिष्य को मंत्र देते हैं तो उस पर निगरानी भी रखते है। उस के अन्दर बैठ कर नाम जाप करते रहते हैं।

उसे प्रतिदिन आनन्द प्रदान करते रहते हैं शिष्य का भौतिक जीवन भी गुरु जी पर आश्रित हो जाता है, गुरु कृपा से साधना के लिए समय भी मिल जाता है। घर वाले भी सहायक बन जाते हैं।

ध्यान के समय किया गया मन्त्र जाप अनन्त गुणा फल देता है। मन्त्र धीरे धीरे रोम रोम में समाने लगता है, फिर ऐसा दौर आता है, जब मन्त्र शक्ति विस्फोट कर कुण्डलनी शक्ति को जागृत कर देती है। अब तक जो शक्ति, सांसारिक कार्य में उलझी हुई थी वह उच्च केन्द्रों में यात्रा करने लगती है

कुण्डलनी शक्ति मूलाधार केन्द्र में सर्प के समान अढ़ाई कुण्डल मार कर

बैठी है। जन्म के समय पर सोई होती है। जब
ध्यान साधना जप किया जाता है, तो मंत्र शक्ति
इस सोई शक्ति पर प्रहार करती है, तो शक्ति
फुंकार मारती है। इसलिए साधक को ध्यान
करते समय, प्रारम्भ में, शरीर में चींटी के काटने
के समान अनुभव होता है अथवा रीढ़ की हड्डी
में एक हलचल सी उत्पन्न होती है। यह चक्र
मूलाधार है। पृथ्वी तत्व है। इस चक्र के भेदन
पर साधक को आरोग्यता प्राप्त होती है। चित्त
की शान्ति व आनन्द प्राप्त होता है। फिर
<u>गुरु कृपा से</u> यह यात्रा आगे बढ़ती है। मूलाधार
के ऊपर स्वाधिष्ठान चक्र है। यह जलतत्व
है। यहां विष्णु अपनी चतुर्भुज शक्ति के साथ
 निवास करता है।

यह अर्द्धचन्द्रमा के समान श्वेत वर्ण का छः दलों का कमल है। इसके विकसित होने पर वाणी में सृजनात्मकता आती है काव्यभाव जागृत होता है।

ध्यान करते 2 जब शक्ति तीसरे चक्र नाभि चक्र का भेदन करती है, तो अग्नितत्व जागृत हो जाता है। तब ध्यान पर बैठने पर मन्त्र जाप नाभि से हृदय तक हिलोर लेता हुआ प्रतीत होता है। शरीर में स्फूर्ति आती है नवीन शक्ति का सचार होता है। फिर यह शक्ति ध्यान के द्वारा हृदय चक्र का भेदन करती है। हृदय चक्र के खुल जाने पर कान में एक नाद सुनाई देता है। धीरे 2 साधना करते 2 नाद की ध्वनि में परिवर्तन होता है

कभी २ कहीं कीर्तन की आवाज, कभी मंजीरे की ध्वनि और कभी कभी नदी का कलकल स्वर या वंशी का मीठा २ स्वर सुनाई देता है। तब समझो कि मेरु नाद में मन पूरी तरह रम जाता है। बुद्धि भी शान्त हो कर मन में विलीन हो जाती है।

हृदय के पास ही अनाहद चक्र का वास है यह वायु तत्व है। इस चक्र के भेदन से व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्णतया बदलने लगता है। सात्विक गुणों का विकास होने लगता है। वाणी में माधुर्य, स्वभाव में कोमलता आ जाती है ईर्षा क्रोध द्वेष का प्रभाव कम होने लगता है साधक जितेन्द्रिय होने लगता है। काम क्षीण होने लगता है।

अब साधक वर्गीकरण कर ध्यान में आनेवाले सेवा अनुभव करता है परन्तु वह स्वयं उन से विलग रहता है।

प्रत्येक चक्र पर साधना करते कई वर्ष लग जाते है। यदि साधक का समर्पण पूरा होता है, तो सतगुरु शिष्य के कई जन्मो की साधना को कुछ वर्षो मे करवा देते है। उनके आने वाले बन्धनों को खोल देते हैं। अपनी शरण मे राव कर अपनी कृपा से विशुद्ध चक्र जो मेरुदण्ड की सीमा है। इस का भेदन कर शिष्य को शोक रहित कर देते है। और दीर्घायु प्रदान करते हैं। यहा से ईडा पिंगला व सुषमणा नाडियां आज्ञा चक्र मे आ कर मिलती है।

आज्ञा चक्र दोनों भौहों के मध्य भ्रुकुटी के भीतर है इसे शिव नेत्र या दिव्य दृष्टि भी कहते हैं। यह श्वेत प्रकाश वाली दो पंखुड़ियों के समान है। यहाँ शिव अपनी शक्ति के साथ, निवास करते हैं। इस स्थान पर ध्यान करने से। प्राण व मन स्थिर हो जाते हैं इस केन्द्र पर ध्यान करने से सम्प्रज्ञात समाधि सिद्ध होती है। पापों का नाश होता है। ध्यान के लिए यह सर्वोत्तम स्थान है। ध्यान करते २ आज्ञा चक्र पर शक्ति पहुँचती है। तब इस चक्र के भेदन से एक अविस्मरणीय अनुभव होता है। तीव्र झंझावात (आंधी) के बीच में विद्युत की गर्जना सुनाई देती है जैसे तेज ध्वनि के साथ वर्षा हो रही है। ऐसे विचित्र अनुभव होते हैं, जिन्हे शब्दों मे वर्णन नही किया जा सकता। शरीर की दिवारों को।

तोड़ कर शक्ति अपने प्रियतम से मिलने को आतुर हो उठती है।

इस प्रकार आज्ञा चक्र के भेदन के बाद सहस्र कमल दल में साधक प्रविष्ट होता है। इस अवस्था पर पहुँचने से साधक ध्यान करते समय प्रकाश का अनुभव करता है कभी ध्यान में चमकते तारे दिखाई देते हैं या फिर प्रणव ॐ के दर्शन होते हैं जिस से साधक को लगता है कि उसकी साधना ठीक दिशा में अग्रसर हो रही है।

इस सहस्रदल के आरम्भिक स्थान को तीसरा तिल या त्रिकुटी भी कहते हैं। जैसे २ साधक साधना में आगे बढ़ता है उसे विभिन्न प्रकार के प्रकाश पुंज रंग बिरंगे दिखाई

देते है। अत्यन्त आनन्द होता है और रोम रोम पुलकित होता है।

अब सतगुरु कृपा से साधक आगे बढ़ता है कभी२ अंधेरी गुफाएं दिखती है, जब शरीर से ऊपर उठता है, तो कभी नीले, कभी सूर्य के उदित होने जैसे रंग के समान प्रकाश दिखाई देता है। ऐसे लगता है जैसे सतगुरु प्रकाश के द्वारा उस गुफा में प्रवेश करवा कर, बाहर खुले मैदान में जाने के लिए मार्ग दिखा रहे हैं। इस प्रकार साधना में कई वर्ष लग जाते है।

अब जब भी साधक ध्यान में बैठता है उस की श्रद्धा के अनुसार उसे भिन्न२ अनुभव मिलते है, कभी कभी उसे लगता है कि वह हजारो मील यात्रा कर के, ऊंचे २ पहाड़ों ने

लम्बे २ पेड़ों को पार कर, किसी अगम्य स्थान की ओर यात्रा कर रहा है। कभी पहाड़ों के पीछे सूर्य उदित के दर्शन होते हैं।

पिंड और ब्रह्मांड मे एकता है। ध्यान द्वारा जहां जहां जाओगे। जिस जिस स्थान का अनुभव करोगे। उस स्थान के प्रभु का वैसा ही रंग रूप नज़र आयेगा। ध्यान मे आया हुआ स्वरूप। ध्यान मे आया हुआ लोक। ध्यान मे आया हुआ ब्रह्मांड। सदैव काल के लिए अजर अमर अखण्ड होगा। ध्यान द्वारा जब साधक चौथी अवस्था अर्थात तुरियापद मे पहुंच जाता है, उसे वहां आनन्द ही आनन्द प्राप्त होता है। वहां वह चरमावस्था को प्राप्त होता है, जिस की तुलना। संसार की

और वहां के अनुभव करवाता है। अब साधक गुरुकृपा से अन्तरमुख हो जाता है, उसे ध्यान में जाने की ललक होने लगती है। कुछ वर्षों में अन्तर की यात्रा जब चाहे कर सकता है।

समाधि क्या है ?

प्रभु को पाने की अन्तिम सीढ़ी समाधि है समाधि का अर्थ है, जो हिल डुल न सके, स्थिर रहे (समाधि मृतक की बनाई जाती है)

आध्यात्मिक क्षेत्र में समाधि का अर्थ है सम-अवस्था, जहां पहुंच कर ध्याता ध्येय ध्यान सब एक हो जाता है। प्रभु के नाम में ध्यान-समाधि लगाने वाला भी एक प्रकार से मृतक के समान होता है, उसमें तनिक भी गति नही होती, इसी अवस्था को समाधि कहते है

धारणा, ध्यान, समाधि तीनों एक ही है जीवित अवस्था को तुम धारणा करते हो, ध्यानभी ऐसी अवस्था का स्थूल या सूक्ष्म कर सकते है, समाधि में अचल अवस्था होती है।

समाधि में ध्यान इस प्रकार लीन हो कि साधक को गुरुदर्शन के अतिरिक्त संसार की किसी अन्य वस्तु का ज्ञान न हो, उस के मनरूपी जगत में वासना का लेशमात्र भी स्थान न हो अपनी चेतन शक्ति के द्वारा चेतन प्रभु के दर्शन करे, तभी साधक की सच्ची स्थिति है।

समाधि दो प्रकार की होती है। सविकल्प तथा निर्विकल्प, कामना वाली और निष्कामता वाली। जब साधक निश्चल, निष्कपट सच सदाचारी हो, तभी समाधि लगेगी

निर्विकल्प समाधि ऊंची समाधि है
इस में साधक सचखण्ड तक पहुंच जाता है
ज्योति में ज्योति लीन होने के अनुभव से
आवागमन के चक्र से गी

ध्यान समाधि सब गुरु कृपा से
सम्भव है। उन की कृपा का आश्रय ले कर
नियमित रूप से भजन सिमरण ध्यान करना है
और फल की आशा न हो। सतगुरु जब
जैसा चाहें। साधक की साधना को बढ़ाने के
पूर्ण समर्थ है

समय २ पर सतगुरु शिष्य के
प्रारब्ध कर्मों को काटते रहते हैं, उससे
सत्कर्म कराते रहते हैं।
राधास्वामी 28th Feb 1 P.M श्रीराम

श्रीराम

(जय गुरुदेव) ॐ

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुर्देवो महेश्वर:
गुरु साक्षात पारब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नम:

ॐ ब्रह्मानन्द परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्

ध्यानमूलम गुरुमूर्ति पूजा मूलम गुरोपदम्
मंत्रमूलम् गुरुवाक्यम् मोक्षमूलम् गुरुकृपा

श्रीराम Sun 7

रामजी राम राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

8 May Mon

{राम कहता मुख शीतल होय
राम कहता छूटे सगली खोय}

Note-{यहां गुरु की (श्रीराम)
(जगह रामजी नाम उच्चारण किया गया है)

रामजी, दिव्यदृष्टि अपनी कृपा से,
किसी किसी को देते हैं और अन्दर की
आंखे खोल देते है, जिस से उन्हे पहचान
सके।

जब रामजी कृपा करते हैं, तो हमें
नित्य हर रोज याद करवाते रहते है कि
तुम देह नहीं हो, तुम आत्मस्वरूप हो।

रामजी के आगे अपनी बुद्धि नहीं चलानी
जो वह कहे उसे 100/100 सत्य मान कर
आज्ञा पालन करना है।

रामजी के सन्मुख हो कर, अपने अहं को नहीं मिटाया, तो अज्ञानता नहीं नाश होगी और उससे बने कर्म नहीं छूटेंगे।

रामजी को अन्दर ही अन्दर, तन मन धन देना है कि हमें संसार का कण भी याद न आये।

संसार में सब से बड़े LOVER हमारे रामजी हैं, परन्तु इस प्यार को MYSTERY रखना है।

रामजी की इच्छा से चलेंगे, तो निर्भयता में रहेंगे। स्वेच्छा में बन्धन है, भय है।

अपने प्रभु (रामजी) के पास श्रद्धा
ले कर जाओगे तो वह आगे बढ़ाएगा।

गुरुवाणी से आज सारा विश्व उजागर
हो रहा है।

जिस मिलिए होवे आनन्द सो सतगुरु कहिए

रामजी की दृष्टि में आलौकिक दिव्यता है।

रामजी माया में क्रीड़ा दिखाते है। यह
परिवार बाल बच्चे मीठे कीड़े है, जो
दुखी करते रहते है।

राम जी को भेंट करने के लिए तीनो लोकों
मे कोई वस्तु नही है।

पूरी श्रद्धा रखेंगे, तो भगवान सुदर्शन
चक्र चलायेंगे। तभी हमारा देहध्यास जाएगा।

यदि हमारे मन में एक भी वैर है तो
राम जी नही बैठ सकते।

राम जी के एक एक वचन की value
करो। उन के मुख से ज्ञान सुन कर
विचार भी करना चाहिए।

राम जी के अनेक रूप हैं जो जिस भाव
से जाता है, उसी भाव से प्राप्त होता है।

राम जी का सारा जीवन ही गीता है।

केवल राम जी के लायक बनें, तपस्या
करें। तभी उन के हृदय में समायेंगे।

राम जी जब मिल गये तो पूरी हुई मुक्ति
हंसते, खेलते, खाते, बीच में, ही, मिल गई
मुक्ति

राम जी के पास हम जीव हो कर आते हैं
और ब्रह्म रूप हो कर जाते हैं।

अगर राम जी, के लिए तड़प नहीं है
तो समझना तू यहां आया ही नहीं है

राम जी के ज्ञान से सब वासनाएं भस्म हो जाती हैं।

राम जी, देह रहित हैं, उन को जानने के लिए। देह रहित ही हो कर जाना जा सकेगा

राम जी अन्तरयामी बन कर अन्दर के भाव समझते हैं So we should be careful.

हमें राम जी की पसन्दी का बनना है ना कि सभा का श्रृंगार।

जब मैं था तब राम जी नहीं, अब राम जी हैं मैं नाही।

राम जी की नज़र केवल निष्कामी भक्त पर पड़ती है।

सब में अपने राम जी को देखा, तो काम पूरा हो गया।

सारा समय अपने 'राम जी' को प्यार देवेगा तो तेरा EGO खत्म होगा।

'राम जी' के मुख से जो CATCH करोगे वह ज्ञान है शेष सब अज्ञान है।

राम जी के प्यार में ही माया छूटती है

अपने राम जी के आगे डंडे जैसे खड़े हो जाओ। मेरी नहीं चलेगी आप की ही चलेगी

तो जीवन मुक्त हो जाओगे

राम जी किसी भी SITUATION में SET
तुम अपने आप को Set कर के दिखाओ।

राम जी का आदर्श ले कर जायेंगे तो
अभ्यास वैराग्य की जरूरत नही पड़ेगी

राम जी को सब अपनाते है। पर जीवन
मुक्त वह ही है प्राणी जिसे राम जी अपनाए

राम जी से प्रेम करेगें तो मन बाहर नही
जायेगा।

राम जी की वाणी आवाज़ आसमानी

111

राम जी की छत्र छाया में कई भूलों से छूट जाते हैं

राम जी ने ज्ञान रूपी TORCH दी है उसे प्रयोग करने के लिए कृपा मांगो।

'राम जी' की मान्यता में रहेंगे, तो वह हमारी माया को काटेगा। ज्ञान का मार्ग सरल हो जायेगा।

राम जी अपनी कृपा से बन्धन में नही रखते जागृति देते हैं

बड़े से बड़ा पाप है अपने को न पहचानना और उन्हे अपने से जुदा देखना।

'रामजी' ही पापी मन को सम्भाल सकते हैं सो। मन उन्हीं को देने के लिए कृपा मांगो।।

जो रामजी से प्रेम रखते हैं तो घर वाले भी तर जाते हैं

'रामजी' की शरणागति में हर वक्त मस्त ही होता है

'रामजी' की एक मुस्कान भक्त को रंग देती है

Sun 21

दिल ही दिल में 'रामजी' को प्यार करो कोई देख नहीं, नहीं तो वह भी सीखेगा

"रामजी का प्रेम भगवान के राज्य में पहुंचाने वाला हवाई जहाज है

'राम जी' के आगे लकड़ी की तरह जड़ हो जाओ। न मन, न बुद्धि, न अहंकार रहे कृपा मांगो

"हरि है खांड रेत में बिखरी हाथी चुनी न जाये कहे कबीर प्रभु ज्ञान बुझाई चींटी हो के खाय

'राम जी' ये विवेक खोलते है कि तू तू आत्मा। है ही ज्ञान स्वरूप, ऐसी कृपा मांगो

'राम जी' विवश बन कर अपने भक्तों के योगक्षेम का भार उठाते हैं।

'राम जी' के हृदय में भक्तों के उद्धार का दर्द है।

'रामजी' केवल भाव के भूखे हैं जो भवसागर से पार कराते हैं

श्रीराम

रामजीरामराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पुकारे गोपाला।

7.3.2000 5 P.M

आरती सद्गुरु देव जी की

ॐ जय सतगुरु देवा। श्री जय सतगुरु --
अपने भक्तों के संकट, दूर करो देवा।

II

तुम हो अलख अविनाशी, तुम अन्तरयामी
तुम ही कर्ता धर्ता, तुम जग के स्वामी

III

अपना रूप दिखाते, करो कृपा भाव रहे
तेरी कृपा का मेरे प्रभु जी, हर पल ध्यान रहे

IV

हर पल तुम को ध्याऊं, तेरे गुण गाऊं
बार बार चरणों में, मैं प्रभु शीश नवाऊं

V

घट में आप विराजो, मन मन्दिर साजो
बाजे अनहद बाजे, जय श्री राम हरे

VI

जगमगा ज्योति सुहावे
रूप तेरा प्यारा
श्वेत वर्ण उजियारा
सतगुरु है मेरा

VII

सब पर कृपा करो, मेरे प्यारे गुरुदेवा
क्षमा करो सब अपराधा, सब तेरी सेवा
ॐ जय - - -

VIII

तेरे द्वारे आये प्रभु करना आप रक्षा
इक पल भी न बिसरे नाम प्रभु तेरा
ॐ जय - -

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला
3.2.00 1245 P.M

आरती

सत्य नारायण जी की

ॐ जय श्री नारायण शरणम्
ॐ जय श्री नारायण शरणम्
शरण मैं आये हम आप की
हम सब के पाप हरणम्
ॐ जय --

II

जब जब पाप बढ़े पृथ्वी पर
तब तब दर्श दीओ
संतो की रक्षा करण
दुष्टों का नाश किओ
ॐ जय श्री --

SUNDAY 2

S		13	27
M			28
T	1		29
W	2		30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

III

अपने भक्तों के कारण,
युग युग रूप धरियो
राम कृष्ण, गुरु नानक
स्वयं को प्रकट कीओ
ॐ जय —

IV

पिछले अवगुण बख्शो
आगे मार्ग देओ
अपनी शरण मे राख कर
सारे कष्ट हरो
ॐ जय — —

V

ज्ञान भक्ति हमें दीजो
तामस दूर करो
सात्विक श्रद्धा बढ़ा कर
सारे पाप हरो
ॐ जय

VI

शरण में आये हम आप की
विनती स्वीकार करो
ज्ञान हीन हमें जान के
भव से पार करो।

ॐ जय श्री--

राम जी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी और तुरा गोपाला।

S	o	13	27
M	o	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	o
S	5	19	o
S	6	20	o
M	7	21	o
T	8	22	o
W	9	23	o
T	10	24	o
F	11	25	o
S	12	26	o

श्रीराम

आरती भोले बाबा की

शिव शंकर महादेव जी की

ॐ जय शंकर जय महादेवा।
जय सच्चिदानन्द नमो नमो। 2

II

शरण में आये है हम तेरी
किरपा कर दो नमो नमो।
ॐ जय शिव –

III

मात पिता भाई सुत बन्धुप
तुम ही हो सब नमो नमो
ॐ जय –

IV

भक्ति शक्ति दे दो हम को
पूर्ण आशा नमो नमो
ॐ जय –

V

विनती हमारी सुन लो स्वामी
करुणा सागर नमो नमो

VI

विवेक वैराग्य ध्यान समाधि
हम सब को लगा दो नमो 2

ॐ जय शिव -

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर दृष्टि गोपाला

S	0	13	27
M	0	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	0
S	5	19	0
S	6	20	0
M	7	21	0
T	8	22	0
W	9	23	0
T	10	24	0
F	11	25	0
S	12	26	0

श्रीराम

आरती वैष्णो देवी माँ की

ज्योति जगा दे माँ
मेरी ज्योति जगा दे माँ
अम्बे मेरी माँ जगदम्बे मेरी माँ

I ज्योति जगा दे

आनन्दमयी माँ आनन्दमयी माँ
परमानन्द दे दे माँ 2

II

शान्तिमयी माँ शान्तिमयी माँ
परम शान्ति दे दे 2

III

कृपामयी माँ कृपामयी माँ
पूरी कृपा कर दे माँ 2

IV

प्रेममयी माँ प्रेममयी माँ
सच्चा प्रेम दे दे माँ 2

S	◊	9	23
M	◊	10	24
T	◊	11	25
W	◊	12	26
T	◊	13	27
F	◊	14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	31
T	4	18	◊
W	5	19	◊
T	6	20	◊
F	7	21	◊
S	8	22	◊

V

ब्रह्म विद्यामयी माँ 2
ब्रह्म ज्ञानी बना दे माँ 2

VII

शक्तिमयी माँ शक्तिमयी माँ
पूर्ण शक्ति दे दे माँ 2

जयकारा शेरा वाली दा
बोल सांचे दरबार की जय

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ
साधिके त्रयम्बिके गौरी
नारायणी नमोस्तुते

SUNDAY 9

सानवीराम राम
श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूर्ण गोपाला"

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
						1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30	31					

बाँके बिहारी जी
की आरती

मेरे बाँके बिहारी तेरी जय हो
तेरी जय हो तेरी जय हो
मेरे बाँके बिहारी -

II
मन में बसे मेरे श्याम मुरारी
श्याम मुरारी गिरधर धारी
तेरी छवि बड़ी प्यारी
तेरी जय हो
मेरे बाँके - - - - .

III
तेरा दर छोड़ मैं किस दर जाऊं
किस आगे मैं व्यथा सुनाऊं
मेरे सब जानहारी तेरी जय हो
मेरे बाँके - - -

SEP 2000
S 3 10 17 24
M 4 11 18 25
T 5 12 19 26
W 6 13 20 27
T 7 14 21 28
F 1 8 15 22 29
S 2 9 16 23 30

IV

तूने हर लिया है मन मेरा
तुम बिन लगता जीवन में अंधेरा
सारी दुनिया तुम पै वारी
तेरी जय हो - - -

V

प्राणपति हो जगतपति हो
मेरी तो अब तुम में गति हो
रखना शरण में मुरारी
तेरी जय हो - - -
मेरे बांके बिहारी तेरी जय हो

राम जी राम राम

श्रीराम
24 3.2000

S	◊	13	27
M	◊	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	◊
S	5	19	◊
S	6	20	◊
M	7	21	◊
T	8	22	◊
W	9	23	◊
T	10	24	◊
F	11	25	◊
S	12	26	◊

श्रीराम लक्ष्मण जानकी
जय बोलो हनुमान की
श्री राम लक्ष्मण जानकी
जय बोलो हनुमान की

जय श्री राम

जय श्री राम

(आरती निराकार की)

धनासरी महला 1

गगन मैं थाल रवि चन्द दीपक बने
तारिका मण्डल जनक मोती
धूप मलयानलो, पवन चंवरो करे
सगल बनराय फुलंत ज्योति
कैसी आरती होय भवखंडना तेरी आरती
अनहता शब्द वाजत भेरी। १॥ रहाउ
सहस तव नयन, नन नैन हैं तोहे कौ
सहस मूरति नना एक तोही
सहस पद विमल, नन एक पद गंध बिन
सहस तव गंध इव चलत मोहि
सब मैं ज्योति ज्योति है सोई
तिस कै चानणा, सब में चानणा होई
गुरु साखी ज्योति प्रगट होई

जो तिस भावै सो आरती होइ
हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो
अनदिनो मोहि आही पिआसा
क्रिपाजल देहो नानक सारंग को
होई जाते तेरै नामि वासा

गोपाल तेरा आरता
हे दयाल तेरा आरता
जो जन तुम्हरी भगत करन्ते
तिन के काज सवारता
हे गोपाल तेरा

दाल सीधा मागउ घीउ
हमरा खुसी करै नित जीउ
पनिआ छादन नीका
अनाज मगउ सत सी का
गऊ भैस मगउ लावेरी

SEP 2000
S M T W T F S
10 24
11 25
12 26
13 27
14 28
1 15 29
2 16 30
3 17
4 18
5 19
6 20
7 21
8 22
9 23

28 AUGUST MONDAY 2000

एक ताजन तुरी चौरी
वाला घर की गहनि चंगी
जन धन्ना लेवे मंगी
गोपाला तेरा आरता
हे दयाला तेरा आरता

रामजीरामराम

श्रीराम
23. 3. 2000

S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S
◊	◊	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊	◊

AUG 2000

"आरती झूले लाल की"

(झूले लाल जी की जय)

लाल मेरी पत रखिओ, सदा झूले लालन
सिंधरी दा सेंवल दा

दमा दम मस्त कलन्दर (जय हो)
रामजी, दा पहला नं० (जय हो)
हों जी, मस्त बना दो (जय हो)
हों जी, शरण लगा लो (जय हो)
हों जी, स्वस्थ बना दो (जय हो)
हों जी, गले लगा लो (जय हो
लाल मेरी पत - -

II

चार चिराग तेरे बलदा होशा
पजवा मैं बालरा आई बला
झूले लालन सिंधरी दा
सेंवल दा - - - - - -

— 12 —

दमादम मस्त कलन्दर

राम जी दा पहला नं०

हमें भी मस्त बना दो।

हमें भी शरण लगा लो।

हमें भी, स्वस्थ बना दो।

हमें भी, गले लगा लो।

लाल मेरी — — .

III

हिंदे, सिन्ध, पीरा तेरी कर कृपा, बाजे।

खुशियां दा वजे घड़ियाल, वला झूले लालन

सिंधरी दा, सेवल दा

दमादम मस्त कलन्दर

राम जी दा पहला नं०

हमें भी शरण लगा लो।

हमें भी मस्त बना दो।

हमें भी गले लगा लो

लाल मेरी

JULY 2000

S	6	13	27
M	0	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	
S	5	19	
S	6	20	
M	7	21	
T	8	22	
W	9	23	
T	10	24	
F	11	25	
S	12	26	

हरदम पीरा तेरी खैर होवे
नाम अली बेड़ा पार लगा
झूले लालन - - - -
सिंधरी दा सेवण दा
दमादम मस्त कलन्दर (जयहो)
राम जी दा पहला नं०
हमें भी मस्त बना दो।
हमें भी शरण लगा लो।
हमें भी स्वस्थ बना दो।
हमें भी गले लगा लो।
लाल मेरी - - - -

रामजी राम राम
श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पड़ी गोपाला।

Sat, 5 Feb 2000
5.40 P.M

सुभान अल्लाह 2
हर शै, में तूँ ही चमक रहा
सुभान अल्लाह 2
हर फूल में, तूँ ही महक रहा
सुभान अल्लाह 2

ऐसी बुद्धि बना दो राम 2
ऐसी कृपा कर दो राम 2

आरती (जगदीश जी की)
ऊँ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे
ऊं जय जगदीश हरे

II
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का
सुख संपति घर आवे, कष्ट मिटे तन का
ऊँ जय - - -

III

मात पिता तुम मेरे, शरण पडूं मैं आपकी
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं आपकी
ॐ जय

IV

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी 2
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी
ॐ जय

V

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता 2
मैं मूर्ख खलकामी, कृपा करो भर्ता
ॐ जय

VI

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति
किस विध मिलूं दयामय, तुम को मैं कुमति
ॐ जय

VII

दीनबन्धु दुख हर्ता, ठाकुर आप मेरे
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, द्वार पड़ा मैं तेरे
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा रहूँ तेरे

VIII

विकय विकार मिटाओ।
पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सतन की सेवा।
ॐ जय —

IX

प्रेम सगा जन, तुम को निशदिन ही ध्यावे
पार लगा दो नय्या, यही अर्जी जावे
ॐ जय - - -

X

प्रभुजी की आरती, जो कोई नित गावे
कहत प्रेमानन्द स्वामी, मन वांछित फल
पावे
ॐ जय - - -

रामजी राम राम

श्री राम
कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर घुरी गोपाला।

Sat Feb 5 7PM
कृपाधाम

रास (कृपा धाम से)

प्रात: 6.45 AM

राधे राधे श्याम, गाऊ मै तेरी गलियों मे
श्रीराम, श्रीराम राम, गाऊ मै तेरी गलियो मे

II

राम का नाम सदा सुखदाई, जिस को जपते हनुमत भाई
ऐसा सुन्दर नाम जपु मै तेरी गलियो मे
जपु मै तेरी गलियो मे, आऊ मै तेरी गलियो मे
श्रीराम श्रीराम - - -

III

कृष्णा का नाम सदा सुखदाई
जिस को जपती मीरा बाई
ऐसा सुन्दर नाम जपु मै तेरी - -
गलियो मे

IV

तूँ मेरा पिता, तूँ है मेरा माता
तूँ मेरा बन्धुप, तूँ मेरा भ्राता
सारे रिश्ते तेरे नाल
जाँऊ मैं तेरी गलियों मे 2
आऊ मैं तेरी गलियों मे

V

तूँ मेरा राखा सबनी थाई
तूँ ही मेरा सच्चा साँई
सारे रिश्ते तेरे नाल
रहूँ मैं तेरी गलियों में
राधे राधे---

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूरा गोपाला।

Feb 5 Sat 7PM
कृपा धाम

AUG 2000

S	6	13	27
M	0	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	◊
S	5	19	◊
S	6	20	◊
M	7	21	◊
T	8	22	◊
W	9	23	◊
T	10	24	◊
F	11	25	◊
S	12	26	◊

दूसरी रास
(पहाड़ी भाषा)

राधे कृष्णा गाणा मेरी जिंदड़िये
राधे कृष्णा गाणा हो।
श्रीराम, श्रीराम गाणा मेरी जिंदड़िये
श्रीराम श्रीराम गाणा हो।

II

मन्दा नही अलाणा, बुरा नही अलाणा।
सब जनी प्रेम बढ़ाना। मेरी जिंदड़िये
सब जनी प्रेम बढ़ाना। हो।
राधे कृष्णा-- --

III

तामस नही खाणा, बुरा नही खाणा
सात्विक भोजन खाणा मेरी जिंदड़िये
सात्विक भोजन खाणा हो।
राधे कृष्णा। ---

IV

अमीरा वी जाराा, गरीना वी जाराा
सब रेये रह जाराा, मेरी जिंदड़िये
सब रेये, रह जाराा है।

राधे कृष्णा गाराा - - - -
श्रीराम, श्रीराम " - - -

राम श्रीराम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर पूरी गोपाल।

SUNDAY 23

Feb 5, 7.15 PM
कृपा धाम

S	6	13	27
M	◊	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	◊
S	5	19	◊
S	6	20	◊
M	7	21	◊
T	8	22	◊
W	9	23	◊
T	10	24	◊
F	11	25	◊
S	12	26	◊

(तीसरी रास)

मेरे घर आना सांवरिया, तोहे जाने न दूंगी
राखूंगी सारी उमरिया, तोहे जाने न दूंगी

II

अपने घर आओगे, तो भजन सुनाऊंगी
प्रेम से सुनोगे सांवरिया, तोहे जाने न दूंगी
अपने घर-

III

अपने घर आओगे, तो ध्यान लगाऊंगी
अन्तर में प्रगटोगे सांवरिया
तोहे जाने न दूंगी

IV

अपने घर आओगे, आनंद पाठ रचाऊंगी
पूर्ण करायोगे सांवरिया, तोहे जाने न दूंगी

V

अपने घर आओगे, तो सखियां बुलाऊंगी
रास रचायोगे सांवरिया, तोहे जाने न दूंगी

श्रीराम

हवन मन्त्र

हे राम जी हमारी बुद्धियों को अपनी
ओर प्रेरित कीजिए

ॐ भूर्भुवः स्वाहः तत्सवितुर्वरेण्यम
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः
प्रचोदयात् 3 बार स्वाहा

ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति

अपराध सहस्त्राणि। क्रियन्ते अहर्निश मया
दासोयामिति मां मत्वा। क्षमस्व परमेश्वरः
आवाहनम् न जानामि, न जानामि विसर्जनम्
पूजा चैव न जानामि, क्षम्यताम् परमेश्वरम्
अन्यथा शरणम् नास्ति। त्वमेव शरणम् मम्
तस्मात कारुण्य भावेन। रक्ष त्वं परमेश्वरः

आहुति मन्त्र (घी की आहुति)

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदम् प्रजापतये
न मम्

ॐ इन्द्राय: स्वाहा: इदम् इंद्रमिद्रान्य

ॐ अग्नेयस्वाहः। इदम् अग्नेय न मम"

ॐ सोमाय स्वाहः इदं सोमाय न मम

ॐ भूः स्वाहः, इदमग्नये न मम

" " " इदम् वायवे न मम

ॐ स्वाह इदम् सूर्याय न मम

हरि ॐ तत्सत्

हमारा क्रोध स्वाहा

हरि ॐ तत्सत्

हमारा लोभ स्वाहा

हरि ॐ तत्सत्

2000

हमारा मोह स्वाहा'

हरि ॐ तत्सत्

हमारा अहंकार स्वाहा'

हरि ॐ तत्सत्

हमारा इर्षा द्वेष स्वाहा'

हरि ॐ तत्सत्

हमारा निन्दा चुगली स्वाहा'

हरि ॐ तत्सत्

हमारे सारे दुर्गुण स्वाहा

यज्ञ देवता सारे सद्गुण श्रीराम ददामि